दिल्ली में अध्ययन यात्रा

पाठ्यक्रम का शीर्षक : हिंदी क्षेत्रों में अध्ययन यात्रा

पाठ्यक्रम : **HIN-527**

श्रेयांक : **02**

स्नातकोत्तर कला (हिंदी)

नाम : कृतिका देविदास नाईक

अनुक्रमांक : **23P0140010**

शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य संकाय

हिंदी अध्ययन शाखा

गोवा विश्वविद्यालय

15/20

GOA UNIVERSITY TALEIGAO PLATEAU GOA

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय	पृष्ठ संख्या
01	प्रस्तावना	02
02	दिल्ली में पहला दिन	03-05
03	दिल्ली में दूसरा दिन	06-14
04	दिल्ली में तीसरा दिन	15-22
05	दिल्ली में चौथा दिन	23-28
06	दिल्ली में अंतिम दिन	29-37
07	उपसंहार	38-39

3/1/2024

प्रस्तावना

यात्रा या भ्रमण से हमें अलग-अलग और नई-नई जगह की जानकारी मिलती है। हम उस जगह के सांस्कृतिक, सामाजिक, भौगोलिक परिस्थिति से परिचित होते है। हमारे ज्ञान और अनुभव में वृद्धि होती है। इसी उद्देश्य के साथ हमें इस सत्र में दो वैकल्पिक पेपर थे - एक 'हिंदी क्षेत्रों में अध्ययन यात्रा' और दूसरा 'भाषा और साहित्य : सामाजिक एवं सांस्कृतिक सर्वेक्षण'। पहले 'हिंदी क्षेत्रों में अध्ययन यात्रा' पेपर कोरोना की वजह से दो साल के लिए नहीं था। लेकिन इस वर्ष पुनः यह पेपर रखा था। इस पेपर का उद्देश्य है कि छात्रों को अन्य प्रदेश की सांस्कृतिक, सामाजिक , ऐतिहासिक एवं भौगोलिक परिस्थिति से अवगत कराना। कक्षा के ज्यादातर छात्रों ने यह पेपर लिया था। मुझे घूमना बहुत पसंद है, और इससे मेरा आत्मविश्वास भी बड़ जाएगा ऐसा सोचकर मैंने यह पेपर लिया। मैंने कभी भी उत्तर भारत में और इतने दिन भ्रमण नहीं किया था। यह मेरा पहला अनुभव था।

इस अध्ययन यात्रा के लिए उत्तर भारत के राजस्थान, मध्य प्रदेश और दिल्ली जैसे हिंदी क्षेत्रों का चुनाव किया गया था। भारत का दूसरा सबसे बड़ा महानगर और राजधानी दिल्ली जाने का निश्चित हुआ। इसके दक्षिण पश्चिम में अरावली पहाड़ियाँ और पूर्व में यमुना नदी है, जिसके किनारे यह नगर बसा हुआ है। दिल्ली एक केंद्र-शासित प्रदेश है। पहले भी जिन शासकों ने दिल्ली पर शासन किया, उनकी भी राजधानी दिल्ली ही थी। दिल्ली पर कई शासकों ने शासन किया। जैसे तुगलक़ वंश, मुगल वंश। इस वजह से मुगलों द्वारा बनाए हुए कई स्मारक ऐतिहासिक स्थल के रूप में दिल्ली में मौजूद है। और कई सारे अन्य ऐतिहासिक स्थल और सुंदर पर्यटन स्थल यहाँ हैं। पहले 13 फरवरी, 2024 को दिल्ली जाने वाले थे पर कुछ समस्या की वजह से उस दिन नहीं जा पाए और यात्रा स्थगित कर दी। और अगले महीने की टिकट निकाल ली और 18 मार्च, 2024 को जाने का निश्चित हुआ। इस रिपोर्ट में हम दिल्ली में कौनसी – कौनसी जगाहें देखी इसके बारे में विस्तार से लिखा हुआ है।

दिल्ली में अध्ययन यात्रा

हमारी 13 फरवरी, 2024 की अध्ययन यात्रा स्थगित करके 18 मार्च, 2024 को रखी थी। सब लोग यात्रा पर जाने के लिए बहुत उत्सुक थे। 26 विद्यार्थी, अध्यापक, अध्यापिका, उनका छोटा लड़का और एक शोधार्ती छात्र ऐसे कुल 30 लोग गए थे। 18 मार्च, 2024 को हमें दोपहर के 2 बजे मड़गाँव के रेल्वे स्टेशन पर बुलाया था। जिस ट्रेन से हम जाने वाले थे उसका नाम 'गोवा एक्सप्रेस' था और वह ट्रेन मड़गाँव स्टेशन पर 3.30 को पहुँचने वाली थी। पर ट्रेन आने में विलंब हुआ इस वजह से सबके चेहरे मुरझाए हुए थे क्योंकि सब लोग 2, 2.30 बजे स्टेशन पर आए थे। 4.30 के आसपास ट्रेन आयी। सब लोग ट्रेन में चढ़ गए। सर ने सबको सीट क्रमांक दिए और सब अपनी-अपनी सीट पर बैठ गए। गोवा एक्सप्रेस से हम दिल्ली के लिए रवाना हुए। दिल्ली पहुँचने के लिए हमें दो दिन लगे।

दिल्ली में पहला दिन

20 मार्च, 2024 को सुबह 6 बजे के आसपास हम दिल्ली, निज़ामुद्दीन स्टेशन पर पहुँच गए। वहाँ से हम पहाड़गंज तक मेट्रो में गए उसके बाद हम रिक्शा से होटल इंडियन इंटरनेशनल में गए। यह होटल नालवा स्ट्रीट के पास है। मेट्रो में सफर करते वक़्त लगा कि आज की दुनिया कितनी तेज हो गयी है और कितनी विकसित हो रही है क्योंकि मेट्रो में कुछ मिनटों में ही हम एक जगह से दूसरी जगह पहुँचते है। होटल पहुँचते-पहुँचते दोपहर हो गयी थी। सब लोग बहुत थक गए थे। सब लोग अपने-अपने कमरे में जाकर नहा धोकर फ्रेश हो गए। फिर सब खाना खाने के लिए चले गए। खाना खाकर हम लोग वहाँ के रामकृष्ण आश्रम मार्ग मेट्रो से अक्षरधाम मंदिर जाने के लिए निकल गए। शाम 4.30 के आसपास हम अक्षरधाम मंदिर में पहुँच गए। अक्षरधाम मंदिर को स्वामी नारायण अक्षरधाम मंदिर कहा जाता है। यह मंदिर स्वामी नारायण की स्मृति में बनाया गया है। इस मंदिर में प्रवेश सुबह 10 बजे से शाम 6.30 बजे तक मिलता है। और सोमवार के दिन यह मंदिर बंद रहता है। इसमें प्रवेश निशुल्क है। यहाँ वॉटर शो, बोट राइड आदि के

लिए पैसे देने पड़ते है। मंदिर में जाने के पूर्व आपकी चेकिंग की जाती है और मंदिर में फोन, बैग लेकर जाना मना है। इसलिए सब के बैग और फोन बाहर लॉकर में रख दिए। इस मंदिर में जाने के लिए ड्रेस कोड भी है। आपके घुटने ढके होने चाहिए नहीं तो आपको एक वस्त्र ओढ़ने के लिए दिया जाता है जिसके लिए आपको पैसे देने पड़ते है। यह दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्वामीनारायण अक्षरधाम मंदिर है। जो भारतीय संस्कृति, सभ्यता, परंपराओं और आध्यात्मिकता को दर्शाता है।

दस द्वार

मंदिर में जाने के पूर्व आपको दस द्वार मिलते है, पाँच द्वारा बायी तरफ तो पाँच द्वार दायी तरफ है। उनमें से पानी गिरता रहता है। अंदर जाने के लिए मयूर द्वार है। द्वार पर मयूर यानी मोर बनाए हुए है। द्वार से अंदर जाकर आपको एक पद चिह्न जो पानी में है, वह दिखायी देता है और स्वामी नारायण का भव्य मंदिर दिखाई देता है। जैसा गोवा के वास्को शहर में राधाकृष्ण का बिरला मंदिर है वैसा ही यह मंदिर है। लेकिन अक्षरधाम मंदिर का क्षेत्र उस मंदिर से बहुत व्यापक और विशाल है। करीब 100 एकड़ भूमि में फैले इस मंदिर को 11 हजार से ज्यादा कारीगरों की मदद से बनाया गया।

स्वामी नारायण की मूर्ति

मंदिर के अंदर स्वामी नारायण की भव्य सोने की मूर्ति है और उनके उत्तराधिकारी की मूर्तियाँ भी बनायी हुई है। मंदिर में प्रवेश करते ही उसकी स्थापत्य कला में आप खो जाते है। दीवार पर बनाए चित्रों और लेखों के माध्यम से स्वामीनारायण के जीवन विषयक महत्वपूर्ण घटनाओं के बारे में पता चलता है। मंदिर में अन्य देवता जैसे शिव पार्वती, लक्ष्मी नारायण आदि देवताओं की मूर्तियाँ है। मंदिर में उच्च संरचना में 234 नक्काशीदार खंभे, 9 अलंकृत गुंबदों, 20 शिखर होने के साथ 20,000

मूर्तियां भी शामिल हैं। मंदिर के बाहरी भाग में तीनों तरफ हाथियों के नक्काशी बने हुए है। मंदिर में ऋषियों और संतों की प्रतिमाओं को भी स्थापित किया गया है। मंदिर को बनाने में लगभग पांच साल का समय लगा था। श्री अक्षर पुरुषोत्तम स्वामीनारायण संस्था के प्रमुख स्वामी महाराज के नेतृत्व में इस मंदिर को बनाया गया था। अक्षरधाम मंदिर 06 नवंबर 2005 को लोगों के लिए खोला गया था। अक्षरधाम मन्दिर को गुलाबी, सफेद संगमरमर और बलुआ पत्थरों के मिश्रण से बनाया गया है। इस मंदिर को बनाने में स्टील, लोहे और कंक्रीट का इस्तेमाल नहीं किया गया।

1. लोटस गार्डन 2. अक्षरधाम मंदिर

मंदिर के बाहर जाते वक्त बच्चों के लिए खेलने की जगह है। कमल की पंखुड़ियों के आकर का लोटस गार्डन बना है। खाने की दुकाने भी बाहर लगी हुई है। दुनिया का सबसे विशाल हिंदू मन्दिर परिसर होने के नाते २६ दिसम्बर २००७ को यह गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड्स में शामिल किया गया। 'अक्षरधाम' का अर्थ है भगवान का दिव्य निवास। इसे भक्ति, पवित्रता और शांति का शाश्वत स्थान माना जाता है। मंदिर में आपको भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिकता और वास्तुकला का एक अच्छा खासा मिश्रण देखने को मिल जाएगा। अगर आप विस्तार से यह मंदिर देखना चाहते है तो आपको कम से कम तीन या चार घंटे चाहिए। भव्य और विशाल अक्षरधाम का मंदिर देखने के बाद हम वापस होटल आए। मंदिर से आते - आते हमें शाम हो गयी इसलिए पहले दिन हम सिर्फ़ अक्षरधाम मंदिर देख पाए।

दिल्ली में दूसरा दिन

इंडिया गेट

दूसरे दिन 21 मार्च, 2024 को सुबह नाश्ता करके हम दिल्ली घूमने के लिए निकल गए। सबसे पहले हम कर्तव्य पथ, नई दिल्ली में स्थित इंडिया गेट देखने के लिए चले गए। सुबह दस बजे हम वहाँ पहुँचे। ज्यादा भीड़ नहीं थी। यह स्मारक 42-43 मीटर ऊँचा है। इसे अखिल भारतीय युद्ध स्मारक के नाम से भी जाना जाता है। यह स्मारक पेरिस के आर्क डे ट्रॉयम्फ़ के समान है। इसे प्रसिद्ध वास्तुकार एडविन ल्यूटियन्स ने डिज़ाइन किया था। इसकी नींव 1921 में ड्यूक ऑफ़ कनॉट ने रखी थी और इसे कुछ साल बाद तत्कालीन वायसराय लॉर्ड इरविन ने राष्ट्र को समर्पित किया था। 1931 में यह बनकर तयार हो गया था। अन्य स्मारकों को देखने के लिए प्रवेश शुल्क या प्रवेश के लिए निश्चित समय होता है वैसा यहाँ नहीं है। यह चौबीसों घंटे खुला रहता है। आप दिन में या रात में यहाँ आ सकते है। इस स्मारक के बीच में से एक छतरी के नीचे आपको नेताजी सुभाष चंद्र भोस का पुतला दिखायी देता है जो स्मारक से कुछ दूरी पर है। पहले वहाँ ब्रिटिश शासक जॉर्ज पंचम की मूर्ति लगी हुई थी, भारत स्वतंत्र होने के बाद उसे हटाकर सुभाष चंद्र भोस की मूर्ति हाली में लगायी गयी। यहाँ से चीटि के समान धुंधला सा राष्ट्रपति भवन भी दिखायी देता है। प्रति वर्ष गणतंत्र दिवस पर निकलने वाली परेड राष्ट्रपति भवन से शुरू होकर इंडिया गेट से होते हुए लाल किले तक पहुँचती है। इंडिया गेट की दीवारों पर युद्धों में शहीद हुए हजारों सैनिकों के नाम लिखे हुए हैं और सबसे ऊपर अंग्रेजी में लिखा है: “To the dead of the Indian armies who fell honoured in France and Flanders Mesopotamia and Persia East Africa Gallipoli and elsewhere in the near and the far-east and in

sacred memory also of those whose names are recorded and who fell in India or the north-west frontier and during the Third Afghan War."

इंडिया गेट का क्षेत्र बहुत बड़ा है। उधर ही कुछ दूरी पर National War Memorial (राष्ट्रीय युद्ध स्मारक) है। जिसका उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2019 में किया था। यह स्मारक अपने सशस्त्र बल को सम्मानित करने के लिए बनाया गया है। यहाँ पर चीन-भारत युद्ध, भारत-पाकिस्तान युद्ध, आदि युद्धों में और ऑपरेशन मेघदूत में शहीद हुए सैनिकों के नाम ईटों पर लिखे हुए है। इसमें अंदर जाने के पूर्व virtually सैनिकों को श्रद्धांजलि दी जाती है।

शहिद हुए सैनिकों के नाम

इंडिया गेट के पास परम योद्धा स्थल भी है। स्मारक के पास लॉन है और गार्डन भी है। इंडिया गेट की चारों और छोटे-छोटे रंगीन पौधे लगाए हुए है। इंडिया गेट के परिसर में एक अन्य स्मारक, अमर जवान ज्योति है, जिसे स्वतंत्रता के बाद जोड़ा गया था। यहाँ निरंतर एक ज्वाला जलती है जो उन अंजान सैनिकों की याद में है जिन्होंने इस राष्ट्र की सेवा में अपना जीवन समर्पित कर दिया। अमर जवान ज्योति की स्थापना 1971 के भारत-पाक युद्ध में भाग लेने वाले सैनिकों की याद में की गई थी। बाहर जाने के लिए एक रास्ता है, उसकी दीवारों पर 1947-1962 तक जो युद्ध या ऑपरेशन हुए है जैसे – भारत-पाकिस्तान युद्ध, गोवा की आजादी, हैदराबाद का कब्जा आदि की संक्षिप्त में जानकारी दी हुई है। उधर ही एक दुकान-सी है जिसमें बोतल, टी-शर्ट, बैग सब सैनिकों के वर्दी के रंग का बना हुआ मिलता है।

दिल्ली का प्रसिद्ध स्मारक इंडिया गेट देखने के बाद हम फ़िरोज़शाह रोड, नई दिल्ली में स्थित रवींद्र भवन जहाँ ललित कला अकादमी, साहित्य अकादमी और संगीत नाटक अकादमी है, वह देखने के लिए गए।

दोपहर के 12 बजे हम वहाँ पर पहुँचे। सर ने पहले उनसे अनुमति ली, फिर हम अंदर चले गए। रवींद्र भवन का निर्माण रवींद्रनाथ टैगोर की जन्मशताब्दी को चिह्नित करने के लिए किया था। वे साहित्यकार होने के साथ कलाकार और संगीतकार भी थे। इसलिए यहाँ पर ललित कला अकादमी, साहित्य अकादमी और संगीत अकादमी है। जब आप रवींद्र भवन की इमारत में प्रवेश करते है तब सबसे पहले आपको अपना बैग बाहर काउंटर पर रखना पड़ता है। बाद में हम वहाँ पर स्थित पुस्तकालय में चले गए। वहाँ पर साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त लेखकों की रचनाएँ है और अन्य रचनाएँ भी उपलब्ध है। हिंदी के साथ अंग्रेजी, मराठी, उर्दू और अन्य भाषा की रचनाएँ वहाँ पर मौजूद है। साथ में कोंकणी की भी रचनाएँ वहाँ पर मौजूद है। वहाँ एक रिडिंग रूम भी है, वहाँ कुछ लोग पढ़ने के लिए बैठे थे। हम जब वहाँ गए तब सब लोग हमें देखने लगे क्योंकि वहाँ पर शांति थी लेकिन इतने बच्चे एक साथ जाने की वजह से कुछ शोर हुआ। लेकिन वे फिर से अपनी किताबें पढ़ने में मग्न हो गए। वहाँ किताब घर भी है, जहाँ से आप किताबें खरीद सकते है। हिंदी के लेखक कमलेश्वर की किताब 'कितने पाकिस्तान' कोंकणी में 'कितले पाकिस्तान' नाम से अनुवाद की हुई है। इसी के साथ कोंकणी की अन्य किताबें है और राजस्थानी, उर्दू आदि अन्य भाषाओं की किताबें वहाँ पर बेचने के लिए रखी हुई है। वहाँ से उपर हम संगीत नाटक अकादमी चले गए। उनका एक पुस्तकालय है जहाँ पर नाट्यशास्त्र संबंधी कुछ किताबें है। वहाँ इप्टा वार्ता, नटरंग, कलावसुधा (त्रैमासिक पत्रिका), आदिवासी संस्कृति, संगीत एवं नृत्य, रंग प्रसंग, स्वर सरिता आदि पत्रिकाएँ रखी हुई है। उसके बाद हम ललित अकादमी में गए। उधर दीवारों पर चित्र बनाकर लगाए हुए है। वहाँ हम ज्यादा देर नहीं रुके।

उधर से हम संगीत अकादमी के वाद्य संग्रहालय देखने के लिए चले गए। वहाँ भारत के सभी राज्यों के लोक वाद्यों को संरक्षित करके रखा है। वहाँ पर तमिल नाडु का घटम, पंडित किशन महाराज का तबला, दक्षिण भारत का गोट्टु वाद्यम, उत्तर भारत की रुद्र वीणा, उड़ीसा का ढोल, केरला का ढोल, गोवा का

वाद्य संग्रहालय

घुमट, कर्नाटक का तासा, आंध्र प्रदेश का रान्जा आदि ऐसे विभिन्न राज्यों के लोक वाद्य यहाँ पर मौजूद हैं।

आंध्र प्रदेश, उत्तर भारत, बिहार, दक्षिण भारत और गुजरात के विभिन्न डमरू यहाँ पर रखे हुए है, साथ में उन्हें वहाँ जिस नाम से जाना जाता है वह भी दिया हुआ है। उसी प्रकार विभिन्न राज्यों की तरह-तरह की बासुरीयां और उनके नाम दिए हुए है। लोकनाट्य में प्रयोग किए जाने वाले मुखौटे भी वहाँ पर रखे हुए है। जैसे – रामलीला में प्रयोग होने वाले मुखौटे, उड़ीसा के साही जात्रा में प्रयोग होने वाले मुखौटे, लदाख और अरुणाचल प्रदेश में लामा नृत्य होता है उस में प्रयुक्त होने वाले मुखौटे, बिहार, उड़ीसा और बंगाल में छाउ नृत्य होता है उस में उपयोग में आने वाले मुखौटे आदि यहाँ पर रखे हुए है।

विभिन्न प्रकार के डमरु और बासुरी

लोकनृत्य में प्रयुक्त किए जाने वाले मुखौटे

रवींद्र भवन देखने के बाद हम जामिया नगर, ओखला, नई दिल्ली में स्थित जामिया मिलिया इस्लामिया कॉलेज में 2 बजे के आस पास पहुँच गए थे। सर उनसे अनुमति लेने के लिए अंदर चले गए। हम सब गेट के बाहर कडी धूप में सर का इंतज़ार कर रहे थे। तभी सर ने आकर बताया की कुछ आंदोलन की वजह से हमें अनुमति नहीं दी गयी। इतनी दूर तक आने के बाद हमें कॉलेज देखने के लिए नहीं मिला इसलिए सब नाराज़ हो गए। उसके बाद हम लोटस टेंपल रोड बहापुर, कलकाजी, नई दिल्ली में स्थित लोटस टेंपल यानी कमल मंदिर देखने के लिए चले गए। वहाँ हम दोपहर के 3 बजे के आसपास पहुँच गए थे। दोपहर हो गयी थी इसलिए सभी ने वहाँ पर दुकानों पर जाकर खाना खाया। इसके बाद हम मंदिर देखने के लिए चले गए।

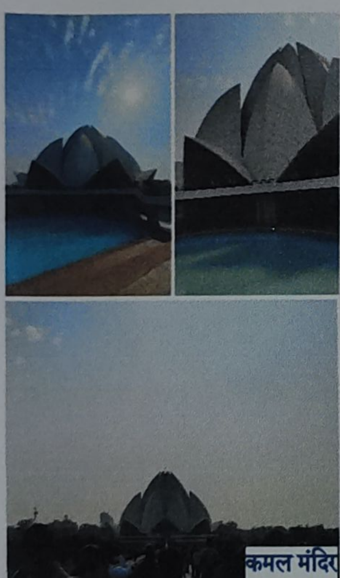

इस मंदिर की आकृति कमल जैसी है इसलिए इसे कमल मंदिर कहा जाता है। मंदिर का उद्घाटन 24 दिसंबर, 1986 को हुआ लेकिन आम जनता के लिए यह मंदिर 1 जनवरी, 1987 को खोला गया। यह एक बहाई उपासना मंदिर है। इसका निर्माण बहा उल्लाह ने करवाया था, जो कि बहाई धर्म के संस्थापक थे। इसलिए इस मंदिर को बहाई मंदिर भी कहा जाता है। मंदिर का स्थापत्य वास्तुकार फ़रीबर्ज़ सहबा ने तैयार किया है। मंदिर के आजू-बाजू पेड़ पौधे है और वहाँ का क्षेत्र बहुत व्यापक है। वहाँ पर चप्पल डालने के लिए थैलियाँ रखी हुई है। मंदिर में जाने के लिए कुछ सीढ़िया चढ़कर ऊपर जाना पडता है। मंदिर के आजू-बाजू में पानी से भरे कुंड है। मंदिर में जाने के पूर्व वहाँ के वालेंटियर मंदिर के बारे में जानकारी देते है और कुछ सूचनाएँ देते है। वे इस मंदिर की जानकारी देते है और अंदर शांति बनाए रखने की सलाह देते है। जब हमसे कहा कि हम अब लोटस टेंपल देखने के लिए जाएंगे तो मुझे लगा कि हमारे अन्य मंदिरों की तरह इसमें भी किसी

देवता की मूर्ति होगी, जहाँ पर पूजा पाठ किया जाता होगा। पर यह मंदिर अन्य मंदिरों की तरह नहीं है। यहाँ पर किसी भी देवता की मूर्ति नहीं है, न इस मंदिर में किसी भी प्रकार का धार्मिक कर्म-कांड किया जाता है। यह मंदिर किसी एक धर्म के दायरे में सिमटकर नहीं रह गया। यहाँ सभी धर्म के, सभी जाति-समुदाय के लोग आते हैं। बहाई समुदाय के मुताबिक, ईश्वर एक है और उसके रूप अनेक हो सकते हैं। वे मूर्ति पूजा को नहीं मानते हैं, इस मंदिर के अंदर अनुष्ठान करने की अनुमति नहीं है। इसके साथ ही मंदिर के अंदर किसी भी वाद्य यंत्र को बजाने पर सख्त पाबंदी है। मंदिर में आपको बिल्कुल भी बोलने की अनुमति नहीं होती, यहाँ हमेशा शांति बनाए रखने की सलाह दी जाती है।

मंदिर आधे खिले कमल की आकृति में संगमरमर की 27 पंखुड़ियों से बनाया गया है, जो कि 3 चक्रों में व्यवस्थित हैं। मंदिर चारों ओर से 9 दरवाजों से घिरा है और बीचोंबीच एक बहुत बड़ा हॉल स्थित है। जिसकी ऊंचाई 40 मीटर है इस हॉल में करीब 2500 लोग एक साथ बैठ सकते हैं। हॉल में व्यापक गोलाकार गुंबद मौजूद हैं जिस पर सभी धर्मों के चिह्न बने हुए है। इस मंदिर का निर्माण समाज में सर्व धर्म समभाव की भावना फैलाने के उद्देश्य से किया है। जब आप इस मंदिर के हॉल में जाते है तो आपको शांति और सुकून का अनुभव होगा। वर्ष 2001 की एक रिपोर्ट के मुताबिक इसे दुनिया की सबसे ज्यादा देखी जाने वाली जगह बताया गया था। वर्थ आइडिया के अनुसार मंदिर की कुल संपत्ति 3000 करोड़ है और यह भारत का 20वां सबसे अमीर मंदिर है।

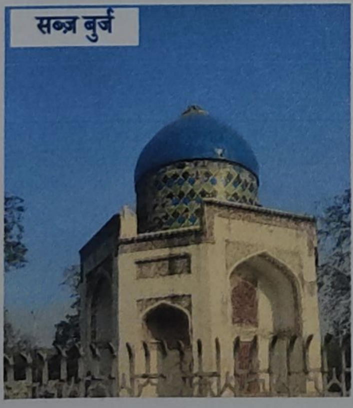

लोटस टेंपल (कमल मंदिर) देखने के बाद हम हुमायूँ का मकबरा देखने के लिए रवाना हूए। शाम को लगभग 5 बजे हम वहाँ पहुंचे। हुमायूँ का मकबरा दिल्ली के प्रमुख ऐतिहासिक स्थलों में से एक है। यह मकबरा निज़ामुद्दीन दरगाह के सामने, मथुरा रोड के पास है। हुमायूँ का मकबरा देखने जाने के पूर्व आपको सब्ज़ बुर्ज दिखायी

देता है। कुछ मुगल इतिहासकारों का मानना है कि सब्ज़ बुर्ज मकबरे का निर्माण फहीम खान के लिए किया गया था, जिनकी मृत्यु 1626 ईस्वी में हुई थी। लेकिन अन्य लोगों का मानना है कि इसे 1530-40 में बनाया गया था। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) ने संरचना का नवीनीकरण किया है। यह भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण संरक्षित स्मारक है।

हुमायूँ की पहली पत्नी हाजी बेगम ने हुमायूँ की मृत्यु के नौ साल बाद 1565 में इस मकबरे का निर्माण कार्य शुरू करवाया था, जो 1572 ई में पूरा हुआ। यह मकबरा लाल बलूआ पत्थर और सफेद संगमरमर पत्थरों से बना हुआ है। इसकी संरचना इस्लामिक (मुगल) और फारसी वास्तुकला का मिश्रण है। मकबरे के निर्माण के लिए सय्यद मुहम्मद गयास को वास्तुकार चुना था। 1993 में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल (UNESCO World Heritage Site) में इसे शामिल किया गया। हुमायूँ का मकबरा सोमवार से रविवार हर दिन खुला रहता और इसका समय सूर्योदय से सूर्यास्त तक है। प्रवेश के लिए शुल्क है और आपको एक भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण का सिक्का दिया जाता है। अंदर जाते वक्त पहले एक सफेद रंग का

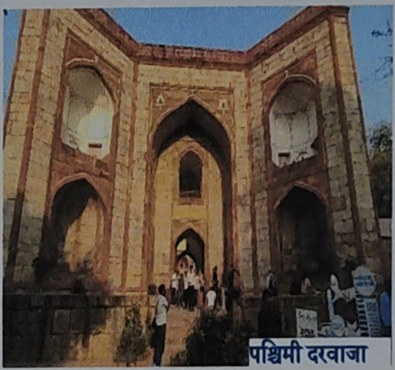
पश्चिमी दरवाजा

द्वार मिलता है। जब आप उससे अंदर चले जाते है, आजू-बाजू पेड़-पौधे लगाए हुए है। एक बहुत बड़ा पश्चिमी दरवाजा है। यह दरवाजा 16 मीटर ऊँचा पश्चिमी दरवाजा है यह बादशाह हुमायूँ के मकबरे का मुख्य द्वार है। दोनों तरफ कक्ष है और एक केंद्रीय रास्ता है। उन कक्षों में हुमायूँ की जानकारी के साथ उस क्षेत्र की जानकारी दी हुई है। साथ ही उस इलाके का और मकबरे का एक मॉडल बना के रखा हुआ है। एक कक्ष में ईसा ख़ान के मकबरे की खुदाई के दौरान प्राप्त अवशेष रखे हुए है।

मकबरे के ऊपर एक बहुत बड़ा सफेद संगमरमर का गुंबद है। गुंबद के ऊपर ६ मीटर ऊंचा पीतल का किरीट कलश स्थापित है और उसके ऊपर चंद्रमा लगा हुआ है, जो तैमूर वंश के मकबरों में मिलता है।

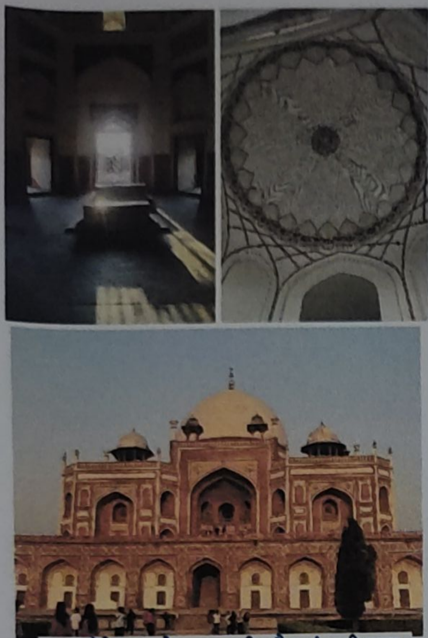

हुमायूँ के मकबरे का बाहरी और अंदरूनी दृश्य

यहाँ पर सफेद गुंबद के नीचे मुगल बादशाह हुमायूँ का शव दफन है। यह स्मारक एक विशाल चबूतरे पर बनाया है जिसकी हर मुहार पर 17 कक्ष है। इन कक्षों की सफेद चूने प्लास्टर की महराबें सफेद संगमरमर से जडे लाल पत्थरों में फ्रेम की गई है। चाहरदीवारी के भीतर मुग़ल शासकों की कई कब्रें हैं और यहीं वर्ष 1857 ई. में लेफ्टिनेंट हडसन ने अंतिम मुग़ल बादशाह बहादुर शाह II को गिरफ्तार किया था। यहाँ बाद में मुग़लों के शाही परिवार के कई सदस्यों को दफ़नाया गया। बादशाह हुमायूँ का मकबरा आगरा में स्थित ताज महल की प्रेरणा बना। यह मकबरा असधारण है क्योंकि शाही परिवार के 160 सदस्य यहाँ दफन है। इनमें शामिल है - शाहजहाँ के बेटे और परम-ज्ञानी शहज़ादे दारा शिकोह और उनके बाद के मुगल बादशाह मुहम्मद आज़म शाह, जहाँदर शाह, फार्रुखसियार, रफी-उद्-दौलाह, रफी-उद्-दराज़त, आलमगीर-2 और अहमद शाह।

ईसा खान के मकबरे की खुदाई के दौरान प्राप्त अवशेष

मकबरे में लगी जाली का निर्माण

बिरला मंदिर का बाहरी दृश्य

हुमायूँ का मकबरा महान मुगल वास्तुकला का बेहतरीन नमूना है, इसे देखने के बाद हम राष्ट्रपति भवन देखने के लिए चले गए। रात होने की वजह से हमें राष्ट्रपति भवन देखने का मौका नहीं मिला। इसलिए हमें बाहर से ही राष्ट्रपति भवन देखा। उसके बाद हम नई दिल्ली में स्थित लक्ष्मी नारायण मंदिर देखने के लिए चले गए। इस मंदिर को बिरला मंदिर भी कहा जाता है क्योंकि यह बिरला परिवार द्वारा स्थापित किया गया था। इसमें भगवान विष्णु और लक्ष्मी की मूर्ति है। मंदिर परिसर में भगवान शिव, गौतम बुद्ध और भगवान श्रीकृष्ण, भगवान गणेश के मंदिर भी स्थित हैं। इसका निर्माण १९३८ में हुआ था और इसका उद्धाटन राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने किया था। यह मंदिर दिल्ली के मशहूर कनॉट प्लेस की पश्चिम दिशा में गोल मार्केट के पास मंदिर मार्ग पर स्थित है। तब महात्मा गांधी इसके उद्धाटन के लिए इस शर्त पर राजी हुए थे कि इस मंदिर में सभी धर्म और जातियों के लोगों को प्रवेश की अनुमति दी जाएगी। मंदिर के अंदर फोन ले जाना मना है। मंदिर के अंदर शांत वातावरण है। हमें घुमते-घुमते रात के आठ बज गए थे इसलिए हम वहाँ से सीधा होटल में आए। सब लोग बहुत थक गए थे। खाना खाके सब सो गए।

दिल्ली में तीसरा दिन

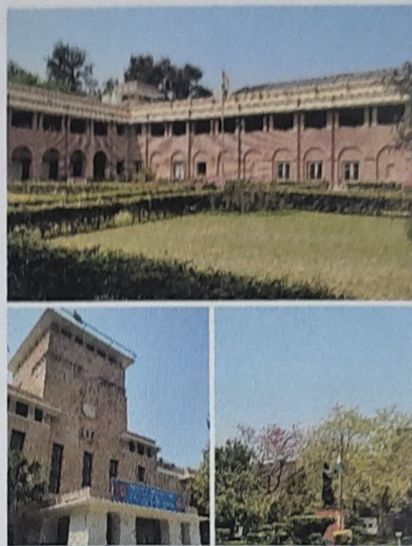

दिल्ली विश्वविद्यालय का कला संकाय और कैंपस

तीसरे दिन 22 मार्च, 2024 को हम सुबह का नाश्ता करके दिल्ली के कुछ प्रसिद्ध कॉलेज और विश्वविद्यालय देखने के लिए चले गए। सर्वप्रथम हमने नई दिल्ली में स्थित दिल्ली विश्वविद्यालय का कला संकाय (faculty of Arts) विभाग देखा। हम वहाँ पर लगभग सुबह 11 बजे पहुँचे। गेट के अंदर जाते ही ठीक कॉलेज की इमारत और पुस्तकालय के सामने स्वामी विवेकानंद का पुतला बनाया हुआ है। और उसके इर्द गिर्द रंगीन फूलों के पौधे लगाए है। दाहिनी ओर सेंट्रल लायब्ररी (केंद्रीय पुस्तकालय) है और बायी ओर विश्वविद्यालय की इमारत है। इमारत का कुछ निर्माण [contruction] का काम चल रहा था। हमें अंदर जाने की इज़ाज़त मिल गयी। जैसे फिल्मों में या टिवी में विश्वविद्यालय दिखाएं जाते है ठीक उसी के समान दिल्ली विश्वविद्यालय का कला संकाय है। कॉलेज के बीचों बीच भारत का झंडा है। आजू बाजू 4 रास्ते है। बगीचा 4 भागों में चौकोनी आकार में विभाजित है। यहाँ पर एक कक्षा में 40-50 के आसपास छात्र पढ़ते है।

साल 1922 में दिल्ली यूनिवर्सिटी को स्थापित किया गया था। इस यूनिवर्सिटी का विचार साल 1911 में आकार लेना शुरू हुआ था जब भारत की राजधानी को कलकत्ता से दिल्ली स्थानांतरित करने का निर्णय लिया गया था। लेकिन पहला विश्व युद्ध, यूनिवर्सिटी की प्रकृति पर मतभेद और धन की कमी की वजह से ये विचार अगले 10 साल तक केवल एक विचार ही बना रहा। 16 जनवरी, 1922 को ब्रिटिश भारत की राजधानी में इंपीरियल विधान सभा में दिल्ली यूनिवर्सिटी बिल पेश किया गया था। उस समय में दिल्ली विश्वविद्यालय की शुरुआत केवल दो फैकल्टी-आर्ट्स और साइंस और 8 डिपार्टमेंट थे। शुरुआत में

दिल्ली विश्वविद्यालय के कुल 3 कॉलेज थे। इन तीन में पहला सेंट स्टीफंस कॉलेज था जो एक मिशनरी पहल के तहत कैम्ब्रिज मिशन टू दिल्ली ने 1881 में स्थापित किया था। दूसरा कॉलेज हिंदू कॉलेज था जो 1899 में स्थापित हुआ था। और फिर रामजस कॉलेज, जिसकी स्थापना 14 मई 1917 को की गई थी। 1970 और 1975 के बीच की अवधि में दिल्ली विश्वविद्यालय के कुछ प्रमुख छात्रों और शिक्षकों के आंदोलन देखे गए। 1975 में आपातकाल के दौरान, 300 से अधिक छात्र संघ नेताओं - जिनमें दिल्ली यूनिवर्सिटी छात्र संघ के तत्कालीन अध्यक्ष अरुण जेटली भी शामिल थे - उन्होंने जयप्रकाश नारायण के शुरू किए गए सत्ता-विरोधी आंदोलन में भाग लिया था।

दिल्ली विश्वविद्यालय देश के सबसे बड़े विश्वविद्यालयों में से एक है। दिल्ली यूनिवर्सिटी में 16 फैकल्टी, 80 अकादमिक विभाग, 80 कॉलेज और लगभग लाखों छात्र-छात्राएं पढ़ाई करते हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय का हिंदी विभाग आज देश के प्रतिष्ठित विभागों में से एक है। इस विभाग की स्थापना संस्कृत विभाग के साथ संयुक्त तत्त्वावधान में सन् 1948 में हुई थी। दोनों विभाग एक ही इकाई के रूप में कार्य कर रहे थे और जाने माने संस्कृतज्ञ महामहोपाध्याय पंडित लक्ष्मीधर शास्त्री संस्कृत-हिंदी विभाग के संस्थापक अध्यक्ष थे। चार वर्ष पश्चात् अंग्रेजी-हिंदी-संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान डॉ॰ नगेन्द्र की अध्यक्षता में सन् 1952 में हिंदी-विभाग स्वतंत्र रूप से स्थापित हुआ।

दिल्ली विश्वविद्यालय से कुछ दूरी पर ही हिंदू कॉलेज है। हम वह देखने के लिए चले गए। यह दिल्ली विश्वविद्यालय का ही कॉलेज है। पहले यह पंजाब विश्वविद्यालय के अंतर्गत था लेकिन बाद में दिल्ली विश्वविद्यालय के अंतर्गत किया गया। वहाँ के सर ने हमें पुरा कॉलेज दिखायी। हिंदी के साथ अन्य विभाग के भिंतीपत्र दिखाए। इस कॉलेज का प्रांगण बहुत व्यापक है। यहीं पर उनका मेक्का फेस्ट होता है। उनके कैंपस में एक छोटा-सा मंच है, वहाँ पर नाटक, स्ट्रीट प्ले होते है। हिंदू कॉलेज में एक Alumni Gallery है। इसमें इस कॉलेज के पूर्व छात्रों की तस्वीरें लगी हुई है, जिन्होंने अपने क्षेत्र में बडा नाम कमाया है।

ऊपर हिंदू कॉलेज की पेंटिंग और नीचे
Alumni Gallery

उनमें गौतम गंभीर, मनोज कुमार, अर्जुन रामपाल, इम्तियाज़ अली, रेखा भारद्वाज, अर्नब गोस्वामी, अजय जडेजा आदि की तस्वीरें लगी हुई है।

वहाँ के एक सर ने हमें कॉलेज की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि हिंदू कॉलेज के संस्थापक सेंट स्टीफंस कॉलेज में एडमिशन [प्रवेश] लेने के लिए गए थे लेकिन उन्हें मना कर दिया गया क्योंकि वे अभिजात वर्ग से नहीं आते थे। वहाँ केवल अभिजात वर्ग के बच्चों को ही प्रवेश था। इसलिए उन्होंने निश्चय किया कि ऐसा कॉलेज बनाऊँगा जहाँ बड़े से लेकर छोटे या छोटे से लेकर बड़े घर के बच्चे पढ़ने आएँगे। 1899 में हिंदू कॉलेज की स्थापना की गयी। यह कॉलेज पुरानी दिल्ली, किनारी बाजार से होते हुए यहाँ आया है। यह इसका तीसरा केंद्र है। राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद [NAAC, नैक] से हिंदू कॉलेज को ए+ + ग्रेड मिला है। हर साल इस कॉलेज में मेक्का फेस्ट होता है और यह तीन दिन का होता है। सुनिधि चौहान जैसे प्रसिद्ध गायक-गायिका इस फेस्ट में गाना गाने आते है। इस कॉलेज में 5000 हजार बच्चे पढ़ते है। यह एकलौता कॉलेज है जो हाथ से पत्रिका बनाता है, सिलता है। इस पत्रिका को बनाने के लिए प्रौद्योगिकी [technology] का इस्तमाल नहीं करते है। यह हस्ताक्षर पत्रिका है। इस कॉलेज में प्रेसिडेंट के लिए चुनाव नहीं होता है। यहाँ पर प्राइम मिनिस्टर के लिए चुनाव होता है। चुना हुआ व्यक्ति अपनी कैबिनेट बनाता है। इस कैबिनेट में 10 मिनिस्टर और 10 सेक्रेटरी होते है। 1999 में जब कॉलेज को सौ साल पूरे हुए थे तब अटल बिहारी वाजपेयी ने कथन बयान किया था की भारत में दो जगह प्रधानमंत्री होते है। बाकी कॉलेज में स्टूडेंट यूनियन है और हिंदू कॉलेज में स्टूडेंट कैबिनेट है। चुनाव के पहले भाषण होता है। बजट अधिवेशन भी होता है। इस कॉलेज में चुनाव राजनीतिक तरीके से होता है। हिंदू कॉलेज का

संविधान भी है। कला, संस्कृति, भाषा को संजो कर रखा है इसलिए यह कॉलेज खास माना जाता है, ऐसा वहाँ के सर ने बताया। उन्होंने बताया कि सेंट स्टीफंस कॉलेज और हिंदू कॉलेज के बीच हर साल वाद-विवाद [debate] होती है| इसमें दोनों कॉलेज के अभिजात लोग सामने बैठकर वाद-विवाद करते है।

सेंट स्टीफंस कॉलेज एक मिशनरी पहल के तहत ब्रिटिश ने बनाया था। इसमें केवल ईसाई धर्म के लोगों को प्रेफरेंस मिलता है। पर हिंदू कॉलेज में सभी धर्म, जाति, समुदाय के लोगों को प्रेफरेंस मिलता है। और पहले सेंट स्टीफंस कॉलेज की गेट पर एक फलक लगा हुआ था, जिस पर लिखा था कि Dogs and Hinduians are not allowed in this college. यह हिंदू कॉलेज के लोगों को नीचा दिखाने के लिए किया था। उनको जवाब देने के लिए हिंदू कॉलेज के बाहर भी एक फलक लगाया गया कि Dogs are allowed but not Stiffeniens. ऐसी भैस दोनों कॉलेजों के बीच चलती आ रही है। सर ने बताया कि कॉलेज के बाहर बगीचे में इम्तियाज़ अली प्रेक्टिस करते थे। उन्होंने कॉलेज थेयिटर में भाग लिया। उन्होंने कॉलेज की ड्रामाटिक्स सोसायटी इब्तिदा की भी शुरुआत की। उस बगीचे को इब्तिदा नाम से भी जाना जाता था। होली के कारण यहाँ के कॉलेजों को छुट्टी थी। दिल्ली में होली 3-4 दिन पहले शुरु होती है।

स्वतंत्रता संग्राम में दिल्ली के तीन कॉलेज- सेंट स्टीफंस कॉलेज, हिंदू कॉलेज और रामजस कॉलेज की भूमिका ज्यादा है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में जितने बड़े स्वतंत्रता सेनानी थे उन्होंने इन कॉलेज में आकर प्रतिनिधित्व किया, बच्चों का सहयोग लिया। जब हम भारत का इतिहास देखते है तो उनमें इन कॉलेजों के नाम होते है। अंग्रेजों के खिलाफ छात्रों द्वारा किए गए कई विरोध और हड़तालों के आयोजन का दिल्ली विश्वविद्यालय साक्षी रहा है।

हिंदू कॉलेज से हम जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में जाने के लिए निकल गए। रास्ते में मदर टेरेसा क्रीसेंट, नई दिल्ली में स्थित ग्यारह मूर्ति स्मारक दिखायी दिया। ग्यारह मूर्तियों का एक समूह, दस विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक, धार्मिक और आर्थिक पृष्ठभूमि के लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो गांधी के

नेतृत्व में हैं। व्यापक रूप से माना जाता है कि दांडी मार्च को चित्रित करने वाली इस प्रतिमा को भारत के अन्य शहरों में भी दोहराया गया है। यह स्मारक देश की आजादी के संघर्ष की याद दिलाता है। देवी प्रसाद रॉय चौधरी को इसके मूर्तिकार के रूप में श्रेय दिया जाता है।

करीब दोपहर के 2.30 बजे हम जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय पहुँचे। उस दिन वहाँ पर चुनाव था इसलिए हमें अंदर बस न ले जाने के लिए कहा। चुनाव के दिनों में वहाँ पर दंगे होते है इसलिए पुलिसवाले और अन्य सुरक्षा दल वहाँ पर मौजूद थे। गोवा के कॉलेज में इतनी भयंकर स्थिति नहीं है। हमारी अध्यापिका का दोस्त वहाँ पर अध्यापक है। उन्होंने उनसे बात की और वे हमें लेने गेट तक आ गए। हम रिक्शा करके विश्वविद्यालय देखने चले गए। अन्य विश्वविद्यालय की तरह इस विश्वविद्यालय का क्षेत्र बहुत विशाल है। इसकी स्थापना 1969 में इंदिरा गांधी ने की थी। 1975 के आपातकाल में विश्वविद्यालय के छात्रों ने भाग लिया था। होस्टलस् के नाम नदियों पर रखे हुए है। इसे जेएनयू भी कहा जाता है। भारत में सभी विश्वविद्यालयों में वर्ष 2016 में इसे तीसरा स्थान प्राप्त हुआ तथा वर्ष 2017 में दूसरा स्थान प्राप्त हुआ। जेएनयू को वर्ष 2017 में भारत के राष्ट्रपति की ओर से सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालय का पुरस्कार मिला। इसे राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद (नैक) द्वारा 3.91 के ग्रेड प्वाइंट (4 के पैमाने पर) प्राप्त हुए है। जेएनयू को भी यूजीसी द्वारा 'यूनिवर्सिटी ऑफ एक्सीलेंस' का दर्जा दिया गया है।

विश्वविद्यालय में तेरह स्कूल और सात विशेष केंद्र है। जेएनयू विदेशी भाषाओं में पांच वर्षीय एकीकृत एमए पाठ्यक्रम संचालित करने वाला पहला विश्वविद्यालय था। जेएनयू अपनी शैक्षिक संरचना के अनुसार ही शिक्षण प्रक्रिया और मूल्यांकन पद्धति में भारत में ऐसा पहला विश्वविद्यालय हुआ है जिसने अंतिम परीक्षा को उपलब्धि-मापन के एकमात्र तरीके को गौण करके निरंतर सीखने की प्रक्रिया पर बल

देकर उस परंपरागत मार्ग को छोड़ा है। यह यूनिवर्सिटी इंडिया के टॉप यूनिवर्सिटीज में तो है ही, इसका नाम दुनियाभर की अच्छी यूनिवर्सिटीज में भी है। विश्वविद्यालय चार शोध-पत्रिकाएँ निकालता है जो भारत और विदेशों में उच्च शैक्षिक जगत में देखी जाती हैं। जेएनयू के कई संकाय-सदस्य चार शोध-पत्रिकाओं के अलावा कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं का संपादन भी करते हैं। यहाँ पर फीस भी बहुत कम है। चुनाव होने की वजह से जगह-जगह नारे लगाए जा रहे थे। चुनाव के कारण हमें कॉलेज के अंदर जाने का मौका नहीं मिला। कोई किसी को मार रहा था तो कोई सिगरेट पी रहा था। वहाँ पर लड़किया भी सिगरेट पीती है। और यह सब खुले-आम कैपस में हो रहा था। आठ हजार से ज्यादा स्टूडेंट्स और करीब 400 टीचर्स वाले इस कैंपस का माहौल बेहद डेमोक्रेटिक माना जाता है। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में विवाद कोई नई बात नहीं है। लोग इसे 'घातक राजनीति का अड्डा', 'देशद्रोही गतिविधियों का केन्द्र', 'दरार का गढ़' आदि कहते रहे हैं।

दोपहर होने की वजह से वो सर हमें वहाँ के केंटीन में लेकर गए। उसके बाद वह हमें उनका केंद्रीय पुस्तकालय दिखाने लेके गए। उनका डॉ. बी. आर. अम्बेडकर केंद्रीय पुस्तकालय एक विशाल पुस्तकालय है, जिसकी 9 मंजिले है। इस पुस्तकालय में 5 लाख से अधिक पुस्तकें हैं, विभिन्न भाषाओं के समाचार पत्र, विभिन्न विषयों की अनुसंधान पत्रिकाएँ एवं शोधार्थी द्वारा जमा किए गए थीसिस एवं डिसर्टेशन, विभिन्न विषयों के डेटाबेस, गवर्नमेंट डॉक्युमेंट्स, यूएन डॉक्युमेंट्स आदि उपलब्ध है। उस पुस्तकालय की 5वी मंजिल पर हिंदी विभाग है। उस मंजिल से क़ुतुब मीनार दिखायी देता है। उनके सर का व्यवहार देखकर एक आतमियता महसूस हुई। आए दिन से हमें वह एक अजनबीपन महसूस हो रहा था। परंतु उनका अपने मेहमान के प्रति अपनेपन का व्यवहार देखकर वहाँ के लोगों के प्रति जो मन में एक छवि बनी थी वो टूट गयी। तब लगने लगा कि सब लोग एक जैसे नहीं होते।

वहाँ से हम दिल्ली शहर के महरौली में स्थित ईंट से बनी, विश्व की सबसे ऊँची मीनार क़ुतुब मीनार देखने के लिए चले गए। लगभग शाम के 6 बजे हम वहाँ पहुंच गए। यहाँ पर प्रवेश शुल्क है। इस मीनार का निर्माण 12वीं शताब्दी में किया गया था। ये ऐतिहासिक इमारत इंडो-इस्लामिक आर्किटेक्चर का बेहतरीन नमूना है। मीनार 73 मीटर ऊंची है और ऊपर तक जाने के लिए 379 सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं। इसके अंदर पहले जाने को मिलता था परंतु एक हादसे की वजह से इसे बंद किया गया। इसके परिसर में लौह स्तंभ, अलाई दरवाजा, इल्तुतमिश की कब्र, अलाई मीनार, अलाउद्दीन का मदरसा, कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद, जैसी इमारतें हैं, जो पर्यटकों को विशेष रूप से आकर्षित करती हैं। इस [मीनार] खूबसूरत निर्माण में संगममार और लाल बलुआ पत्थर का इस्तेमाल किया गया है। हिंदू पक्ष का दावा है कि क़ुतुब मीनार का ऑरिजिनल नाम विष्णु पिलर है, जिसे कुतुबदीन ने नहीं बनवाया था। बल्कि, इसे खगोलशास्त्री वराहमिहिर ने बनवाया था जो सम्राट चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के नवरत्नों में से एक थे।

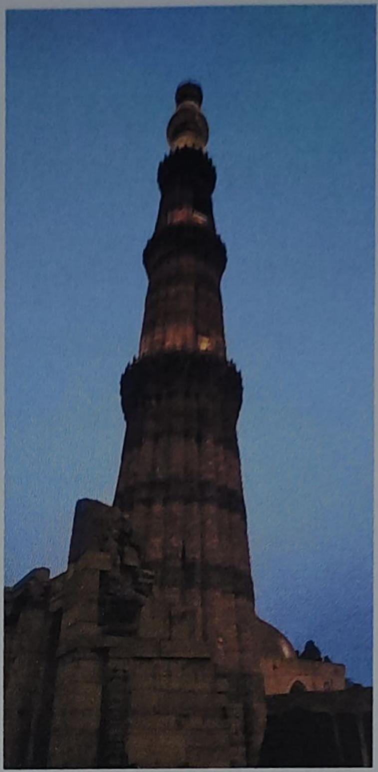

क़ुतुब मीनार

दिल्ली के अंतिम हिन्दू शासक की पराजय के तत्काल बाद 1193 में क़ुतुबुद्धीन ऐबक द्वारा इसे 73 मीटर ऊंची विजय मीनार के रूप में निर्मित कराया गया। दिल्ली सल्तनत के संस्थापक क़ुतुब-उद-दिन ऐबक ने ईस्वी सन् 1200 में क़ुतुब मीनार का निर्माण करवाना शुरू किया था। इसके बाद 1220 में ऐबक उत्तराधिकारी और पोते इल्तुमिश ने इस मीनार में तीन मंजिल और बनवा दी थी। इसके बाद 1369 में सबसे उपर वाली मंजिल बिजली कड़कने की वजह पूरी तरह से टूट कर गिर गई। इसके बाद फिरोज शाह

तुग़लक़ ने एक बार फिर से क़ुतुब मीनार का निर्माण करवाना शुरू किया और वो हर साल 2 नई मंजिले बनवाते रहे। क़ुतुब मीनार का निर्माण करवाना शुरू ऐबक ने किया था और पूरा करवाया इल्तुतमिश ने और 1369 में मीनार को दुर्घटना के कारण टूट जाने के बाद दुरुस्त करवाया फिरोजशाह तुगलक ने।

कुव्वत-उल-इस्लाम क़ुतुब मीनार के पास ही भारत में बनने वाली पहली मस्जिद है। इस मस्जिद का नाम अंग्रेजी में "द माइट ऑफ इस्लाम मस्जिद" था, जिसका अर्थ है 'इस्लाम की शक्ति'। इस इमारत का निर्माण मूल रूप से इस्लाम की ताकत जाहिर करने के लिए किया गया था। इस मस्जिद का निर्माण हिन्दू मंदिर की नींव पर किया गया है। ऐसा कहा जाता है कि यह 27 हिन्दू मंदिरों को तोड़कर इसके अवशेषों से निर्मित की गई थी। कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद का निर्माण भी क़ुतुब-उद-दिन ऐबक ने 1192 में करवाया था। यह मस्जिद भारतीय उपमहाद्वीप की काफी पुरानी मस्जिद भी बताई जाती है। इस मस्जिद का निर्माण करवाने के बाद फिर इल्तुमिश (1210-35) और अला-उद-दिन ख़िलजी ने इस मस्जिद का विकास करवाया।

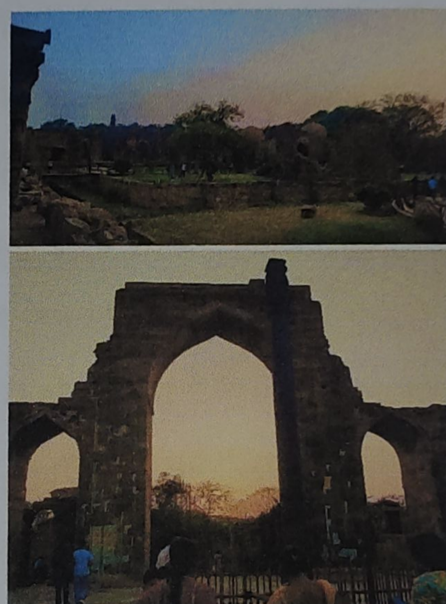

1. क़ुतुब मीनार के पास के खंडहर 2. लौह-स्तंभ

इस मस्जिद के प्रांगण में एक 7 मीटर ऊँचा लौह-स्तंभ है। लौह स्तंभ का निर्माण गुप्त साम्राज्य के चंद्रगुप्त द्वितीय ने दो हजार साल से भी पहले किया था, लेकिन इसकी विशेषता यह है कि इतने वर्षों के बाद भी इस लोहे के स्तंभ में अभी तक जंग नहीं लगी है। यह क़ुतुब मीनार का परिसर युनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल के रूप में स्वीकृत किया गया है।

दिल्ली में चौथा दिन

23 मार्च, 2024 को सुबह 4.30 बजे हम उत्तर प्रदेश के शहर आगरा, वृंदावन और मथुरा जाने के लिए बस से रवाना हुए। 7. 30 के आसपास हम नाश्ता करने के लिए शिवा का ढाबा में रुके। नाश्ता करके हम फिर आगरा जाने के लिए रवाना हुए। 11 या 11.15 के आस पास हम आगरा पहुँचे। यहाँ पर स्थित ताज महल विश्व के 7 अजूबों में से एक है। 2007 में, इसे विश्व के नए 7 आश्चर्य (2000-2007) पहल का विजेता घोषित किया गया था। ताज महल बाहर से देखने के लिए एक व्यक्ति के लिए 50 रुपये है और विदेशी पर्यटक के लिए ज्यादा है। ताज महल अंदर से देखने के लिए एक व्यक्ति के लिए 200 रुपए और विदेशी पर्यटक के लिए ज्यादा है। अपना आधार कार्ड या कोई भी आयडी कार्ड आपको दिखाना पड़ता है। ताज महल शुक्रवार के दिन बंद रहता है और बाकी के दिन सूर्योदय से 30 मिनिट पहले और सूर्यास्त से 30 मिनिट पहले खुला रहता है। कोई भी ऐतिहासिक स्थल देखने के लिए गाइड की आवश्यकता होती है। इसलिए हमारे साथ भी एक गाइड था। इस स्मारक के आसपास प्रदूषण फैलाते वाहन प्रतिबन्धित हैं। पर्यटक पार्किंग से या तो पैदल जा सकते हैं, या विद्युत चालित बस सेवा द्वारा भी जा सकते हैं। ताज महल जाने के पूर्व आपकी जाँच की जाती है। ताज महल के 1862 से अब तक की तस्वीरें लगी हुई है।

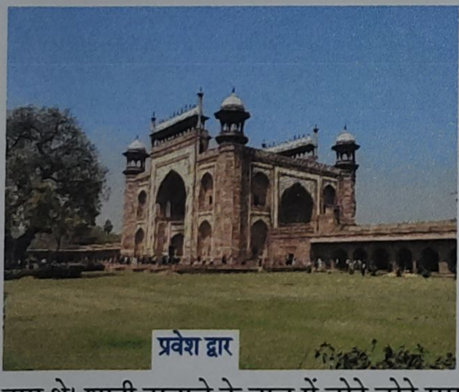
प्रवेश द्वार

ताज महल के अंदर जाने के पूर्व एक शाही दरवाजा है। गाइड ने बताया कि उस दरवाजे पर 22 गुंबद (dome) बने हुए है, आगे 11 और पीछे 11। वह दर्शाते है कि ताज महल को बनने में 22 साल लगे। चार बगीचे है और चार द्वार है। मुगल बादशाह के समय उन द्वारों के नाम थे। शाही दरवाजे के बाजू में छोटे छोटे सराय बने हुए है। यह कुल 210 कमरे है। उस समय बाहर के बाजार में जो लोग अपनी चीजे बेचने आते थे, वे इन कमरों में रहते थे।

शाही दरवाजे से जब आप अंदर जाते है तब आपको ताज महल दिखायी पड़ता है। अंदर कुल 16 बगीचे है और 53 फव्वारे है। जो दर्शाते है कि 1653 में ताज महल बनाया था। शाहजहाँ अपनी बेगम मुमताज से बेहद प्यार करते थे। चौदवे बच्चे को जन्म देते वक्त मुमताज की मृत्यु हो जाती है और शाहजहाँ को इसका बहुत दुःख होता है, इसलिए अपनी पत्नी की याद में शाहजहाँ ने ताजमहल बनवाया। 1631 में ताज महल बनाना शुरू किया था और वह 1653 में बनकर पुरा हुआ। ताजमहल के पूरा होने के तुरंत बाद ही, शाहजहाँ को अपने पुत्र औरंगज़ेब द्वारा अपदस्थ कर, आगरा के किले में नज़रबन्द कर दिया गया था। शाहजहाँ की मृत्यु के बाद, उन्हें उनकी पत्नी के बराबर में दफना दिया गया था। इसकी वास्तु शैली फ़ारसी, तुर्क, भारतीय और इस्लामी वास्तुकला के घटकों का अनोखा सम्मिलन है। ताजमहल मुग़ल वास्तुकला का उत्कृष्ट नमूना है।

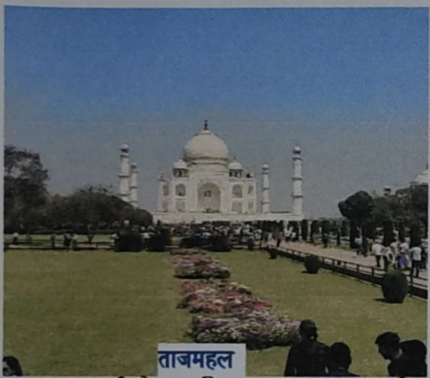
ताजमहल

ताजमहल के अंदर जाने के पूर्व आपको अपने जूते पर डालने के लिए एक कवर दिया जाता है ताकी जूतों पर लगी मिट्टी वहाँ पर लगकर वह गंदा न हो। ताजमहल एक चौकोनी चबूतरे पर खडा है। इसके नीचे विशेष लकडी का इस्तमाल किया है, वह लकडी पानी की वजह से इतनी मज़बूत खडी है। इसलिए अगर यमुना नदी सुक गयी तो ताजमहल गिर सकता है। इसके चारो कोनों पर चार विशाल मीनारें स्थित हैं। यह प्रत्येक 40 मीटर ऊँची है। इन मीनारों में एक खास बात है, यह चारों बाहर की ओर हलकी सी झुकी हुई हैं, जिससे कभी गिरने की स्थिति में, यह बाहर की ओर ही गिरें, एवं मुख्य इमारत को कोई नुकसान न पहुँच सके। ताजमहल के अंदर जाते वक्त एक मेहराब रूपी द्वार है। इसके मुख्य कक्ष में मुमताज महल एवं शाहजहाँ की नकली कब्रें हैं। इसके नीचे असली कब्रें हैं। यहाँ पर फोटो खींचना मना है। इस इमारत के ऊपर एक बडा गुम्बद है। मुख्य गुम्बद के मुकुट पर कलश जैसा है।

सुलेखन तथा अन्य कारीगरी

यह शिखर कलश आरंभिक 1800ई० तक स्वर्ण का था और अब यह कांसे का बना है। इस कलश पर चंद्रमा बना है, वह दिखने में त्रिशूल के जैसा लगता है। ताजमहल बनाने में लगे सफेद संगमरमर पत्थर को राजस्थान मकराना से लाया गया था, जैस्पर को पंजाब से, हरिताश्म या जेड एवं स्फटिक या क्रिस्टल को चीन से। तिब्बत से फीरोजा, अफगानिस्तान से लैपिज़ लजूली, श्रीलंका से नीलम एवं अरबिया से इंद्रगोप या (कार्नेलियन) लाए गए थे। कुल मिला कर अठ्ठाइस प्रकार के बहुमूल्य पत्थर एवं रत्न श्वेत संगमरमर में जडे गए थे। 1857 के भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, ताजमहल को ब्रिटिश सैनिकों एवं सरकारी अधिकारियों द्वारा काफी विरुपण सहना पडा था। इन्होंने बहुमूल्य पत्थर एवं रत्न, तथा लैपिज़ लजूली को खोद कर दीवारों से निकाल लिया था। इसके वास्तुकार उस्ताद अहमद लाहौरी थे और इस पर सुलेखन कर्ता अमानत खान शिराज़ी थे। इसे बनाने के लिए हजार हाथियों का इस्तमाल किया गया था। और बाईस हजार मजदूरों का योगदान है। ताजमहल की इमारत के कोनो में स्तंभ है जो असल में सपाट है पर जब आप उसे कुछ दूरी पर जाकर देखते है तो उसके 6-7 भाग दिखायी देते है। यह एक प्रकार का भ्रम [illusion] है।

ताजमहल के संदर्भ में कुछ कथाएं प्रचलित है। पहली कथा है कि, शाहजहाँ की इच्छा थी कि यमुना के उस पार भी एक ठीक ऐसा ही, किंतु काला ताजमहल निर्माण हो जिसमें उनकी कब्र बने। शाहजहाँ को अपदस्थ कर दिया गया था, इससे पहले कि वह काला ताजमहल बनवा पाए। काले पड़े संगमरमर की शिलाओं से, जो कि यमुना के उस पार, माहताब बाग में हैं; इस तथ्य को बल मिलता है। परंतु, 1990 के दशक में की गईं खुदाई से पता चला, कि यह सफेद संगमरमर ही थे, जो कि काले पड़ गए थे। ऐसा भी

कहा जाता है, कि शाहजहाँ ने उन बाईस हजार कारीगरों के हाथ कटवा दिये थे, या उन्हें मार दिया था, जिन्होंने ताजमहल का निर्माण कराया था। परंतु इसके पूर्ण साक्ष्य उपलब्ध नहीं हैं। कुछ लोगों का कहना है, कि ताजमहल के निर्माण से जुड़े लोगों से यह करारनामा लिखवा लिया गया था, कि वे ऐसे रूप का कोई भी दूसरी इमारत नहीं बनाएंगे। ताजमहल प्रेम का प्रतीक माना जाता है। सन् 1983 में, ताजमहल युनेस्को विश्व धरोहर स्थल बना। इसके साथ ही इसे विश्व धरोहर के सर्वत्र प्रशंसा पाने वाली, अत्युत्तम मानवी कृतियों में से एक बताया गया। ताजमहल को भारत की इस्लामी कला का रत्न भी घोषित किया गया है।

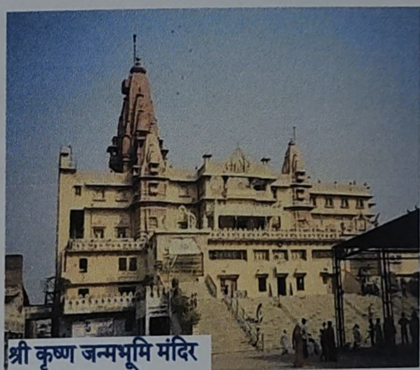
श्री कृष्ण जन्मभूमि मंदिर

भारत के साथ जगभर में प्रसिद्ध पर्यटन स्थल ताजमहल देखने के बाद हम मथुरा के श्री कृष्ण जन्मभूमि मंदिर में गए। वहाँ पहुंचते हमें शाम हो गयी। हम जल्दी-जल्दी बस से उतर कर मंदिर के तरफ गए। कुछ चलकर जाने के बाद हमें मंदिर का द्वार [गेट] 3 दिखायी दिया। इस मंदिर में फोन, बैग लेकर जाना मना है। मंदिर में गेट पे ही जांच की जाती है। वहीं पर चप्पल उतारकर हम मंदिर में चले गए। मंदिर में जाने के लिए लगभग 20-25 सीढ़िया है। हमें राधा-कृष्ण के दर्शन करने के लिए मिल गए क्योंकि हमने दर्शन किये ही थे की मंदिर के गर्भगृह का द्वार बंद हो गया। उसी मंदिर में भगवान गणेश और मारुति की मूर्तियां है। हम मंदिर के बाहर स्थित अन्य छोटे मंदिरों में गए। वहीं पर ही जेल यानी कारागार है, जहाँ पर भगवान कृष्ण ने जन्म लिया था। कहा जाता है कि करीब पांच हजार साल पहले मल्लपुरा क्षेत्र के कटरा केशव देव में राजा कंस का कारागार हुआ करता था। इसी कारागार में भाद्रपद मास की अष्टमी तिथि को विष्णु के अवतार भगवान कृष्ण का जन्म हुआ था। यहीं पर यह मंदिर अब स्थित है ऐसा कहा जाता है।

कैदखाने के ऊपर जाने के लिये मिलता है। वहाँ पर एक खाली सफेद दिवार है और उस पर कृष्ण दिखायी देते है ऐसा लिखा है। मंदिर के बगल में एक शाही ईदगाह मस्जिद भी है।

बताया जाता है कि भगवान कृष्ण का यह मंदिर तीन बार तोड़ा और चार बार बनाया जा चुका है। विद्वानों का मत है कि तब श्रीकृष्ण के प्रपौत्र वज्रनाभ ने मथुरा कारागार के पास उनका पहला मंदिर बनवाया। इस बात के प्रमाण उस स्थान पर मिले एक शिलालेख पर ब्राह्मी-लिपि में मिले है। सम्राट विक्रमादित्य के शासन काल में यहीं दूसरा मंदिर 400 ईस्वी में बना। उस भव्य मंदिर की स्थापना संस्कृति और कला के रूप को प्रदर्शित करने के लिए की गयी। इतिहासकारों के अनुसार, इस भव्य मंदिर पर महमूद गजनवी ने सन् 1017 ई. में आक्रमण कर इसे लूटने के बाद तोड़ दिया था। खुदाई में मिले संस्कृत के एक शिलालेख से पता चलता है कि 1150 ईस्वी में राजा विजयपाल देव के शासनकाल के दौरान जज्ज नाम के एक व्यक्ति ने श्रीकृष्ण जन्मभूमि पर एक नया मंदिर बनवाया था। उसने विशाल और भव्य मंदिर का निर्माण करवाया था। इस मंदिर को 16वीं शताब्दी के शुरुआत में सिकंदर लोदी के शासन काल में नष्ट कर डाला गया था। इसके बाद लगभग 125 वर्षों बाद जहांगीर के शासनकाल के दौरान ओरछा के राजा वीर सिंह देव बुंदेला ने इसी स्थान पर चौथी बार मंदिर बनवाया। कहा जाता है कि इस मंदिर की भव्यता से चिढ़कर औरंगजेब ने सन 1669 में इसे तुड़वा दिया और इसके एक भाग पर ईदगाह का निर्माण करा दिया। ब्रिटिश शासनकाल में वर्ष 1815 में नीलामी के दौरान बनारस के राजा पटनीमल ने इस जगह को खरीद लिया। श्रीकृष्ण जन्मभूमि की दुर्दशा देखकर पंडित मदन मोहन मालवीय ने उद्योगपति जुगलकिशोर बिड़ला को श्रीकृष्ण जन्मभूमि के पुनर्रुद्धार को लेकर एक पत्र लिखा। मालवीय की इच्छा का सम्मान करते हुए बिड़ला ने सात फरवरी 1944 को कटरा केशव देव को राजा पटनीमल के तत्कालीन उत्तराधिकारियों से खरीद लिया। बिड़ला ने 21 फरवरी 1951 को श्रीकृष्ण जन्मभूमि ट्रस्ट की स्थापना की। 1982 में वर्तमान

मंदिर का निर्माण कार्य पूरा हुआ। कृष्ण जन्माष्टमी, राधाष्टमी, दिवाली और होली इस मंदिर और पूरे ब्रज क्षेत्र में मनाए जाने वाले प्रमुख त्योहार हैं।

वहाँ से हम वृंदावन के एक कृष्ण मंदिर में गए। वहाँ पर हम रिक्शा से गए क्योंकि रास्ता छोटा होने की वजह से वहाँ बस नहीं जा सकती थी। होली होने की वजह से मंदिर में जाते वक़्त हम पर रंग डाला गया। यह एक छोटा-सा मंदिर है। यह पत्थरपुरा, वृन्दावन में स्थित है। वहाँ पर एक ब्राह्मण था जो हमें उस मंदिर के पास लेकर गया। उसने बताया कि श्री श्री बृजबिहारी चैरिटेबल ट्रस्ट है जो उन विधवाओं की मदद करता है, जिनका इस दुनिया में कोई नहीं है। जो बहुत मुश्किल से अपना गुजारा कर रही है। ट्रस्ट उन्हें भोजन, कपड़े, आर्थिक सहायता देता है। और गायों के भोजन और चिकित्सा के लिए फंड इकट्ठा करता है। ज़रुरतमंद की मदत करता है। और मंदिर में जाने के पूर्व उन्होंने हमें अपने माता-पिता का स्मरण करने के लिए कहा और हाथ-पैर धोकर मंदिर में प्रवेश करने के लिए कहा। यह मंदिर यानी एक मध्यम कमरा था, जिसमें भगवान कृष्ण और राधा की मूर्ति थी और उसके पास एक पंडित जी बैठे हुए थे। राधा और कृष्ण की मूर्ति के आगे पर्दा था। उस पंडित जी ने उसे हटाया और हमें भगवान के दर्शन करने के लिए दिए। उसके बाद उन्होंने कहा कि यहाँ पर एक तुलसी की माला और कुछ दिया जाता है जिससे सारी समस्याएं दूर हो जाती है। और उसके लिए 500 या उससे अधिक रुपए का दान देना होता। हमारे कुछ छात्रों ने दान दिया। तभी एक छात्र ने कहा की वह सिर्फ़ 200 रुपए का दान देना चाहती है। तो वे बोले कि नहीं तुम्हें सिर्फ़ 500 रुपए का दान देना है। उनकी यह बात मुझे खटक गई क्योंकि जब हम दान देते है तो वह सीमित नहीं होता है और जो हम खुशी से देते है वह स्वीकार करना चाहिए। इससे तो यही प्रतित होता है कि वे भगवान के नाम पर सिर्फ़ पैसा हडपना चाहते है। वहाँ से हम वापस होटल आने के लिए निकल गए और मध्यरात्री के समय हम होटल पहुँच गए।

दिल्ली में अंतिम दिन

पांचवे दिन 24 मार्च, 2024 को हम सुबह नाश्ता करके दिल्ली के कुछ अन्य ऐतिहासिक स्थल देखने के लिए गए। सबसे पहले हम कनॉट प्लेस, नई दिल्ली में स्थिति अग्रसेन या उग्रसेन की बावली देखने के लिए गए। वहाँ पर हम 10 बजे के आसपास पहुँच गए। यह बावली शहर के बीच में है। पर यह बावली वहाँ पर है ऐसा दिखाई नहीं देता है क्योंकि बावली के पास जाने के लिए एक छोटी सी सड़क है। कोई भी बाहर का व्यक्ति जिसको इसके बारे में जानकारी नहीं है उनको बावली कहाँ है यह पता भी नहीं चलेगा। बावली के बाहर 'उग्रसेन की बावली' नाम का फलक है। उसके बाजू में उस बावली की जानकारी देने वाला फलक भी है। बावली यानी पानी संचयन के लिए बनाया हुआ एक प्रकार का कुआ। पहले के जमाने में ऐसी बावली बनाकर पानी का संचयन करते थे। जल भंडार के लिए ऐसी बावली का प्रयोग किया जाता था। इसे बावड़ी भी कहा जाता है। बावली के अंदर जाने के लिए एक मध्यम दरवाजा है। यहाँ पर लोग बैठने के लिए आते है क्योंकि उस जगह का वातावरण शांत और ठंड है। दिल्ली में मार्च-मे में बहुत गर्मी होती है पर वहाँ पर ठंडा लगता है। बावली में करीब 105 सीढ़ियाँ है। नीचे पानी है पर वह पानी काला पड़ गया है। और बहुत गंदा हो गया है। नीचे पानी में उतरने को नहीं मिलता है। वहाँ पर एक रस्सी बंदी हुई है। ऐसा माना जाता है कि इस संरचना का निर्माण महाभारत काल के दौरान किया गया था। कई इतिहासकारों का मानना है कि 14 वीं शताब्दी में महाराजा अग्रसेन ने इसे बनाया था। "यह सोपानयुक्त कुआँ अथवा बावली, एक भूमिगत इमारत है

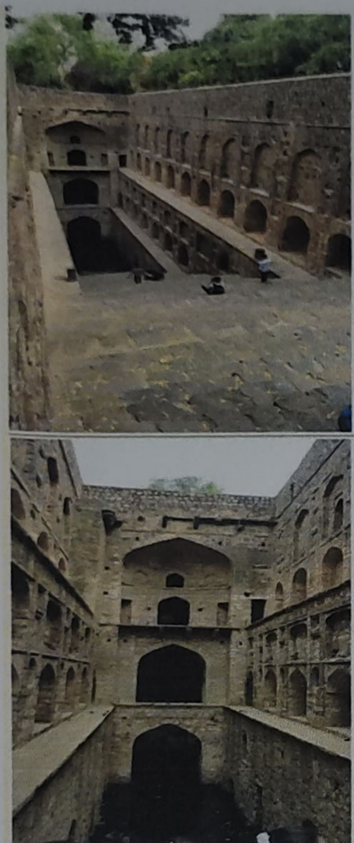

अग्रसेन की बावली

जिसका निर्माण मुख्यतः मौसम के परिवर्तन के कारण जल की आपूर्ति में आई अनियमितता को नियंत्रण करने हेतु जल के संग्रहण के लिये किया गया था। इस बावली का निर्माण अग्रवाल समुदाय के पूर्वज राजा उग्रसेन द्वारा किया गया।..." ऐसा बावली के बाहर लगे जानकारी फलक पर दिया है। इस बावड़ी का निर्माण लाल बलुए पत्थर से हुआ है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा यह बावली संरक्षित है। यह 60 मीटर ऊँचा है और 15 मीटर चौडी है। अग्रवाल समाज ने इस बावली का जीर्णोद्धार कराया। इसकी स्थापत्य शैली उत्तरकालीन तुगलक़ तथा लोदी काल से मेल खाती है। इस बावली के संदर्भ में कुछ किंवदंतियाँ प्रसिद्ध है। इस बावली को दिल्ली की भूतियाँ जगहों में से एक माना जाता है। जो लोग पानी के पास जाते थे वे आत्महत्या करते थे इस प्रकार की खबरें प्रसिद्ध है। यूट्यूब पर भी इस संदर्भ में कहीं वीडियो है।

अग्रसेन की बावली देखने के बाद हम राजघाट देखने के लिए रवाना हुए। यमुना नदी के तट पर स्थित राजघाट महात्मा गांधी की स्मृति में बनाया हुआ एक स्मारक है। मूल रूप से, राजघाट गेट एक पुराने गेट का नाम था जो दिल्ली के शाहजहानाबाद नामक शहर में मौजूद था। यह यमुना नदी के पश्चिमी तट पर राजघाट नामक स्थान पर खुलता था। बाद में, जिस क्षेत्र में गांधीजी का स्मारक बनाया गया, उसे राजघाट कहा जाने लगा। भारत की आजादी में महात्मा गांधी की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। 15 अगस्त, 1947 को भारत आजाद हुआ। 30 जनवरी, 1948 को जब गांधीजी प्रार्थना स्थान पर जा रहे थे तब नाथूराम गोडसे ने गोली मारकर उनकी हत्या कर दी। यमुना नदी के पास स्थित एक स्थान पर उनका अंतिम संस्कार किया था। इसलिए राष्ट्रपिता महत्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए इस स्मारक का निर्माण किया गया। राजघाट की तरफ जाते वक्त बाहर महात्मा गांधी का पुतला बना हुआ है और उस पर नीचे लिखा है कि 'स्वयं वो बदलाव बनो जो देखना चाहते हो' (Be the change you wish to see.)। थोड़ी देर चलकर जाने के बाद एक गेट मिलता है उसकी एक बाजू में राजघाट के बारे में जानकारी देने वाला

फलक है तो दूसरी ओर एक फलक पर महात्मा गांधी की जानकारी दी हुई है। जब हम गेट से अंदर जाते है तो स्मारक की ओर जाने के लिए एक बड़ा द्वार है और उसके दोनों बाजू में उपर जाने के लिए फुटपाथ है। द्वार के दोनों बाजू में सुंदर-सुंदर रंगीन फूलों के पौधे लगाये हुए है। और आजू-बाजू गांधीजी के उद्धरण भी लिखे हुए है। जैसे, 'शुद्ध हृदय से निकला हुआ वचन कभी निष्फल नहीं होता। '; 'बगैर सत्संग के (स्वः) आत्मा सूख जाती है।' यह उद्धरण हिंदी और अंग्रेजी में है।

1. ऊपर से गांधीजी के समाधि स्मारक का दृश्य
2. गांधी समाधि स्मारक

मुख्य द्वार से पत्थर निर्मित फुटपाथ स्मारक तक जाता है। यह स्मारक देखने के लिए प्रवेश निःशुल्क है। स्मारक के पास जाने से पहले आपको अपने जूते उतारने पड़ते है। यह स्मारक खुले आसमान ने नीचे है। स्मारक को वानु जी भुटा ने बनाया है। यह स्मारक काले संगमरमर की बनी एक वर्गाकार संरचना है जिस पर 'हे राम' लिखा हुआ है। गांधीजी की जब हत्या कर दी गयी तब उनके मुँह से 'हे राम' शब्द बाहर इसलिए उस स्मारक पर 'हे राम' ऐसा लिखा हुआ है। वहाँ एक मशाल है जो कांच से ढकी हुई है और वह लगातार जलती रहती है। स्मारक के आसपास हरे-भरे लॉन है, कई जगह पर पेड़ है। राजघाट का क्षेत्र व्यापक है। गांधीजी सरल-साधारण जीवन जीते थे इसलिए यह स्मारक भी सीधा-सादा है। ऊपर जब जाते है तब आपको वहाँ से वह स्मारक बीचों बीच दिखायी देता है और वहाँ से वह क्षेत्र और सुंदर दिखायी देता है। लोग वहाँ पर सैर करने के लिए आते है। ठंड हवा भी वहाँ पर चलती रहती है और एकदम शांत वातावरण वहाँ पर है।

राजघाट के आसपास भारत पर शासन करने वाले अन्य राजनीतिज्ञों के स्मारक स्थित हैं। इनमें जवाहरलाल नेहरू का शांतिवन, लाल बहादुर शास्त्री का विजयघाट, इंदिरा गांधी का शक्ति स्थल, ज्ञानी जैल सिंह का एकता स्थल और राजीव गांधी की वीर भूमि शामिल हैं। राजघाट पर हर शुक्रवार को स्मारक के परिसर में कार्यक्रम और सर्व-धर्म प्रार्थना का आयोजन किया जाता है। हर साल 02 अक्टुबर और 30 जनवरी को श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है और कार्यक्रम होता है।

गांधी के बाल अवस्था से वृध्दा अवस्था की तस्वीरें

राजघाट के पास कुछ दूरी पर 'गांधी दर्शन म्यूज़ियम' है। वहाँ बाहर गांधीजी का पुतला है। दीवार पर हिंदी और अंग्रेजी में लिखा है - 'मेरा जीवन मेरा संदेश है।' (My life is my message.)। उसके पूर्व एक गोलाकार कक्ष बना हुआ है जिसके बाहर गांधीजी की बाल अवस्था से वृद्धावस्था तक की तस्वीरें लगी हुई है। इस म्यूज़ियम में गांधीजी के संपूर्ण जीवन की जानकारी मिलती है। वहाँ चित्र और जानकारी फलक के माध्यम से गांधी जी के जीवन की विस्तार से जानकारी मिलती है। वहाँ के गाइड ने बताया की अगर संपूर्ण जानकारी प्राप्त करनी है या विस्तार से म्यूज़ियम देखना है तो तीन से चार घंटे लगते। हमारे पास समय की बहुत कमी थी इस वजह से उन्होंने हमें गांधीजी के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं की जानकारी दी। वहाँ पर एक छोटा-सा साबरमती के आश्रम, गांधीजी के निवास स्थान, सेवाग्राम आश्रम और गांधीजी की कुठिया, यरवदा जेल आदि के मॉडल बनाये हुए हैं।

बेंच

सन् 1930 में दांडी यात्रा के दौरान वेजलपुर गाँव (गुजरात) में गांधीजी ने जिस बेंच पर बैठकर जन समूह को संबोधित किया था वह बेंच वहाँ पर रखा हुआ है। विभिन्न राष्ट्रों द्वारा गांधी शताब्दी में जारी किये गए डाक टिकट का संग्रह कर उन्हें एक फ्रेम में डालकर रखा है। भारत

छोड़ो आंदोलन की जानकारी दी हुई है और गांधीजी ने जो अन्य आंदोलन किये उनकी भी जानकारी दी हुई है। परदेशी कटाक्ष चित्रकारों ने गांधीजी के स्केच निकाले थे, वह 1930 में वर्तमान पत्रों में छपे थे। वे चित्र भी हमें वहाँ पर देखने को मिलते है। नमक सत्याग्रह, स्वदेशी आंदोलन के उस समय के चित्र वहाँ पर मौजूद है। टैगोर के साथ हुई उनकी बातचीत, शांतिनिकेतन की भेट, दांडी मार्च की तस्वीरें यहाँ पर है। उनके जीवन से जुड़ी हर एक घटना की तस्वीरें और वर्णन इस म्यूज़ियम में है। गांधीजी की युवा अवस्था की तस्वीरें, उनकी पत्नी के साथ तस्वीरें भी वहाँ पर दिखायी देती है। आईन्सटाइन का गांधीजी संबंधी कथन वहाँ महाप्रयाण इस शीर्षक के अंतर्गत लिखा है। गांधीजी की मृत्यु के बाद अंतिम संस्कार की तस्वीर, मृत्यु के पूर्व जो बचे हुए पत्र हैं उन्हें लिखते वक्त की तस्वीरें, गांधीजी प्रार्थना सभा में जाते वक्त, उनपर लगी गोली की तस्वीर इन सबका समावेश इस म्यूज़ियम में किया है। उसकी के साथ गांधीजी को मिले पत्रों के लिफ़ाफ़ों का संग्रह, गांधीजी अपना जीवन किस प्रकार व्यतीत करते थे, उनके बचपन की तस्वीर, उनके माता-पिता की तस्वीर, उनके पढ़ाई के रिजल्ट्स, लंदन की तस्वीरें, भारत विभाजन की तस्वीरें, जवाहरलाल नेहरू की प्रधानमंत्री बनने के बाद की तस्वीरें इस म्यूज़ियम में हैं।

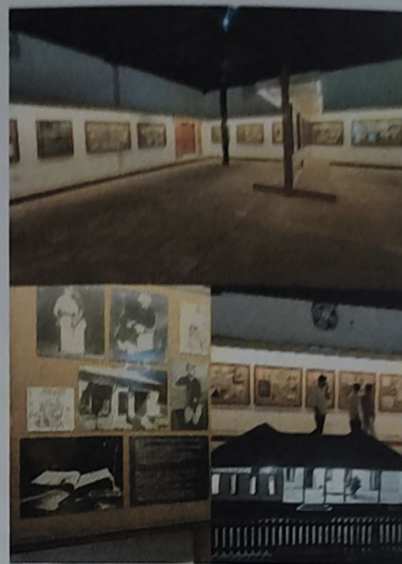

म्यूज़ियम की तस्वीरें

राजघाट देखने के बाद हम पुरानी दिल्ली में स्थित जामा मस्जिद देखने के लिए चले गए। वहाँ पर हम रिक्शा से गए। दोपहर 2 बजे के आसपास हम वहाँ पहुंच गए थे। दिल्ली की जामा मस्जिद मुगल स्थापत्य का बेहतरीन उदाहरण है। यह भारत की सबसे बड़ी मस्जिदों में से एक है। लाल किले से 500 मीटर की दूरी पर मौजूद ये मस्जिद अपनी भव्यता और खूबसूरती के लिए दुनियाभर में मशहूर है। मुगल बादशाह

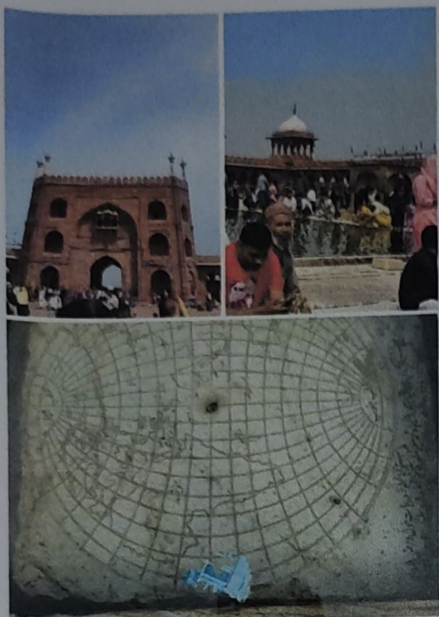

1. दरवाजा [प्रवेश के लिए] 2. वुज़ू
3. धूप घड़ी [solar clock]

शाहजहां ने 6 अक्तूबर 1650 को जामा मस्जिद की आधारशिला रखी थी। 25 जुलाई 1657 के दिन यहां पहली बार ईद उल जुहा पर नमाज़ अदा की गई थी। मस्जिद में जाने के लिए लगभग 30-35 सीढ़िया है। और एक शाही दरवाजा है। ऐसे और दो दरवाजें हैं। मस्जिद देखने के लिए जाने के पूर्व आपको अपने जूते बाहर रखने पड़ते है। मस्जिद के ठीक सामने एक तालाब-सा है। जिसे इस्लाम में वुज़ू कहते है। यह शरीर के भागों को धोने के लिए एक इस्लामी प्रक्रिया है, यह शुद्धि का एक धार्मिक तरीका है। वुज़ू में हाथ, मुंह, नाक, बाजुएँ, सिर और पाँव को पानी से धोना शामिल है और यह इस्लाम में धार्मिक अनुष्ठान का एक महत्वपूर्ण अंग है। नमाज़ पढ़ने के पूर्व लोग वहाँ पर अपने हाथ-पाँव धोते है। मस्जिद के सामने एक धूप घड़ी (solar clock) है। जिससे पुराने जमाने में वक़्त और खास तौर से जुहर (दोपहर) की नमाज़ का वक़्त तै किया जाता था।

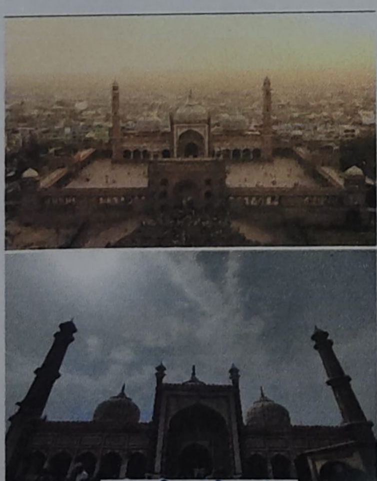

जामा मस्जिद की तस्वीर

ऐसा कहा जाता है कि जामा मस्जिद का असली नाम "मस्जिद-ए-जहान्नुमा" (Masjid-e-Jahan Numa) है, यह अरबी भाषा में "दुनिया की सबसे बड़ी मस्जिद" का मतलब होता है। यह नाम मस्जिद के विशाल आकार और भव्यता को दर्शाने के लिए रखा गया है। हालांकि इसे सामान्यतः "जामा मस्जिद" के नाम से जाना जाता है। जामा मस्जिद के तीन संगमरमर के गुबंद हैं, जिन पर काली पट्टियां हैं। दो बड़ी मीनारे है। मस्जिद में कुल 11

मेहराब है - 10 छोटे और एक बड़ा। मेहराब यानी डाटवाला गोल दरवाज़ा। बाजू में छोटे छोटे मेहराब बने हुए है और छोटी चार मीनारे है जिस पर से पूरी दिल्ली का दृश्य दिखायी देता है। वहाँ से लाल किला भी दिखायी देता है। पर हम वहाँ पर नहीं गए क्योंकि हमें देर हो रही थी। संगमरमर और लाल पत्थर से मस्जिद का निर्माण किया गया है। इसके लिए लाल रंग के बलुआ पत्थर विभिन्न राजाओं और नवाबों ने भेंट किए थे। यहाँ रोज़ाना मुसलमानों के लाखों श्रद्धालु नमाज़ पढ़ने आते हैं और इसे दिल्ली का धार्मिक, सांस्कृतिक और पर्यटन स्थल माना जाता है। यहाँ पर एक साथ 25 हजार लोग नमाज़ अदा कर सकते है।

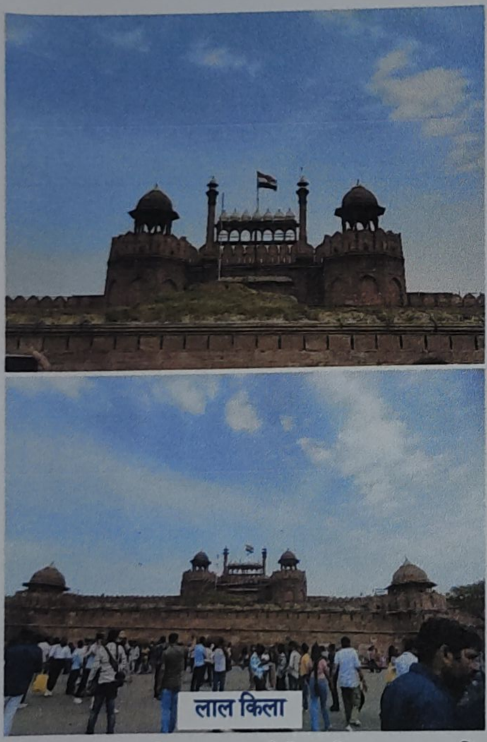

जामा मस्जिद देखने के बाद हम लाल किला देखने के लिए चले गए। जामा मस्जिद से 500 मीटर की दूरी पर नेताजी सुभाष मार्ग, चांदनी चौक में यह किला स्थित है। किले को देखने के लिए लोगों की बहुत भीड़ रहती है। हम वहाँ पर दोपहर 2.30 के आसपास पहुंच गए थे। हम ने किले को केवल बाहर से देखा, अंदर नहीं गए। परंतु दिल्ली का लाल किला न केवल वास्तुकला का एक अभूतपूर्व नमूना है बल्कि भारतीय इतिहास की कुछ सबसे अहम घटनाओं का भी गवाह है। भारतीय और मुगल वास्तुशैली से बने इस भव्य ऐतिहासिक कलाकृति का निर्माण पांचवे मुगल शासक शाहजहां ने करवाया था, जब उन्होंने अपनी राजधानी को आगरा से दिल्ली स्थानांतरित करने का फैसला किया था। शाहजहाँ के दरबार के उस्ताद हामिद और उस्ताद अहमद ने 1638 में निर्माण शुरू किया और 1648 में इसको पूरा

किया। दिल्ली के लाल किला का स्थापत्य दरअसल आगरा के लाल किले से प्रेरित है जिसे शाहजहाँ के दादा अकबर ने बनवाया था।

17वीं शताब्दी में जब लाल किले पर मुगल बादशाह जहंदर शाह का कब्जा हो गया था, तब करीब 30 साल तक लाल किला बिना शासक का रहा था। इसके बाद नादिर शाह ने लाल किले पर अपना शासन चलाया। उसके बाद 18वीं सदी में अंग्रेजों ने लाल किले पर अपना कब्जा जमा लिया और इसे किले में जमकर लूट-पाट की। 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के बाद, किले को ब्रिटिश सेना के मुख्यालय के रूप में प्रयोग किया जाने लगा था। भारत की आजादी के बाद सबसे पहले देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने इस पर तिरंगा फहराकर देश के नाम संदेश दिया था। तब से भारत के प्रधानमंत्री हर वर्ष स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले पर राष्ट्रीय झंडा फहराते हैं।

1947 में भारत के आजाद होने पर ब्रिटिश सरकार ने यह परिसर भारतीय सेना के हवाले कर दिया था, तब से यहां सेना का कार्यालय बना हुआ था। २२ दिसम्बर २००३ को भारतीय सेना ने ५६ साल पुराने अपने कार्यालय को हटाकर लाल किला खाली किया और एक समारोह में पर्यटन विभाग को सौंप दिया। इस किले के अंदर मोती मस्जिद, हयात बख्श बाग, छत्ता चौक, मुमताज महल, रंग महल, खास महल, दीवान-ए-आम, दीवान-ए-खास, हीरा महल, प्रिंसेस क्वार्टर, नौबत खाना (नक्करख़ाना), नहर-ए-बिहिश्त, हमाम आदि स्थान है। इस किले के अंदर एक संग्रहालय भी बना हुआ है। इस किले का असली नाम किला-ए-मुबारक था। अंग्रेजों ने इसकी विशाल लाल बलुआ पत्थर की दीवारों के कारण इसका नाम रेड फोर्ट रख दिया, जबकि स्थानीय लोगों ने उसका अनुवाद लाल किला किया। लाल किला को 2007 में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था। इसे प्राचीन स्मारक और पुरातत्व स्थल और अवशेष अधिनियम, 1959, के तहत राष्ट्रीय महत्व का स्मारक भी घोषित किया गया है और इसका प्रबंधन भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा किया जाता है।

लाल किला देखने के बाद हम सरोजिनी नगर मार्केट में चले गए। वहाँ पर सभी ने खरीदारी की। वहाँ से सीधा हम होटल में आए।

दूसरे दिन सुबह 5 बजे ट्रेन थी इसलिए सभी ने अपने बैग पैक करके रख दिए। 25 मार्च, 2024 को सुबह 3 बजे के आसपास हम होटल से निज़ामुद्दीन स्टेशन जाने के लिए निकल गए। सुबह की 5 बजे की निज़ामुद्दीन एक्सप्रेस से हम गोवा आने के लिए रवाना हुए। बहुत दिनों के बाद घर जाएंगे इस वजह से सब बहुत खुश थे। 25 मार्च को होली थी इसलिए होली न मनाने क दुःख था पर हमारे एक छात्र ने रंग लाया था। वहिं रंग सबने एक दूसरे को रंग लगाया और होली मनाई। दूसरे दिन 26 मार्च, 2024 को सुबह 10 बजे के आसपास हम गोवा के मड़गाँव स्टेशन पर पहुँच गए। लगभग 11-12 बजे सब लोग अपने घर पहुँच गए। दिल्ली जाते वक़्त हमारी ट्रेन मध्य प्रदेश, भोपाल से गयी थी और आते वक़्त गुजरात, मुंबई से आयी थी। हमारी यह यात्रा सुखद और सफल हुई।

उपसंहार

दिल्ली में हमें विश्वविद्यालय की ओर से अध्ययन यात्रा के लिए लेकर गए थे। भारत की राजधानी दिल्ली को महाभारत काल में इंद्रप्रस्थ कहा जाता था। जब मुगल भारत पर शासन करने लगे तब शाहजहाँ के समय इसे शाहजहाँनाबाद कहा जाने लगा। दिल्ली पर कई शासकों ने शासन किया। उनमें तुगलक वंश और मुगल वंश सबसे प्रमुख है। दिल्ली को सबसे बड़े महानगरों में से एक बडा महानगर कहा जाता है। दिल्ली राजधानी होने के नाते केंद्र सरकार की तीनों इकाइयों- कार्यपालिका, संसद और न्यायपालिका के मुख्यालय नई दिल्ली और दिल्ली में स्थापित हैं। यहाँ पर राष्ट्रपति भवन, अन्य देशों के दूतावास [Embassy], आदि हैं। दिल्ली में कई सारे ऐतिहासिक स्थल है जो इतिहास की महत्त्वपूर्ण घटनाओं के साक्षी है। हम ने ऐसे कई स्थलों को देखा। जैसे दिल्ली का सबसे प्रसिद्ध स्मारक इंडिया गेट जो शहिद सैनिकों की स्मृति में बनाया था। गांधीजी का जहाँ पर अंतिम संस्कार किया था वहाँ पर गांधी समाधि स्मारक है जो राजघाट नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ गांधी दर्शन म्यूज़ियम भी है, जिसमें गांधीजी के संपूर्ण जीवन की विस्तार से जानकारी मिलती है। लाल किला जिस पर जब भारत स्वतंत्र हुआ था तब तिरंगा लहराया था दिल्ली के पर्यटन स्थलों में सबसे मशहूर जगह है। इसी तरह हुमायूँ का मकबरा, अग्रसेन की बावली और सबसे प्रसिद्ध उत्तर प्रदेश के आगरा में स्थित ताज महल, कुतुब मीनार जो सबसे ऊंची मीनार है, यह सभी स्थलों का ऐतिहासिक महत्व है। और यह दिल्ली के प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है।

ऐतिहासिक स्थलों के साथ दिल्ली में कुछ प्रसिद्ध धार्मिक और सांस्कृतिक स्थल भी है। जैसे अक्षरधाम मंदिर जो भारत का सबसे बडा और भव्य मंदिर है। लोटस टेंपल या कमल मंदिर किसी एक धर्म का मंदिर नहीं है बल्कि वे एकता को मानते है, वे सर्व-धर्म समभाव में विश्वास रखते है। बिरला का लक्ष्मी नारायण मंदिर, उत्तर प्रदेश के मथुरा में स्थित श्री कृष्ण जन्मभूमि मंदिर आदि प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है। दिल्ली में होली धूम-धाम से मनाई जाती है। वहाँ पर होली के तीन-चार दिन पहले ही होली खेलनी शुरु हो जाती है।

भारत की राजधानी दिल्ली है और यह सबसे बड़ा महानगर है तो हमें लगता है कि यह एक विकसित नगर होगा, पर जब वहाँ जाते है, वहाँ के गलियों में जाते है तब हमें उसकी असलियत पता चलती है। ऐसा नहीं है कि यह एक गंदा, अस्वच्छ, अविकसित नगर है। यहाँ पर विकास हुआ है। यहाँ मेट्रो है, जिससे सिर्फ कुछ मिनिटों में हम एक जगह से दूसरे जगह जा सकते है। अच्छे-अच्छे स्कूल महाविद्यालय यहाँ पर है। पर समाज का एक भाग है जो अभी भी इन सुविधाओं से अछूता है। जिन के पास पेट भरने के लिए खाना नहीं है, रहने के लिए घर नहीं है, पहने के लिए अच्छे कपडे नहीं है। यहाँ पर अभी भी बहुत से ऐसे बच्चे है जो स्कूल जाने के बजाय रास्तों पर गाडियों के पीछे भागकर फूल भेजकर अपना पेट भरते है। हम जब दिल्ली घुमने लिए बस से जा रहे थे तब एक लडका बिना अपनी जान की फिकिर किए, आसपास चल रही गाडियों को देखे बिना हमारी बस के पीछे फुल भेचने के लिए भागने लगा। ऐसे ही एक छोटी लड़की हम जिस होटल में रुके थे उसके पास की गली में पेन बेचती थी। ऐसे ही एक सुबह जब हम घूमने के लिए जा रहे थे तब रास्ते में एक छोटी लड़की दो डंडों को बंधी रस्सी पर चल रही थी। उसकी आँखों में एक दर्द झलक रहा था। या ऐसा लग रहा था कि वह उससे जोर-जबरदस्ती कराया जा रहा है। दिल्ली की ऐसी स्थित देखकर लगा कि हम गोवा में कितने सुरक्षित है। हमें पढ़ने को मिलता है, हमें हमारे ज़िंदगी के निर्णय लेने का हक्क है।

इस अध्ययन यात्रा से बहुत सारी अच्छी जगाहें देखने का मौका मिला और दिल्ली की सांस्कृतिक, सामाजिक परिस्थिति को प्रत्यक्ष देखने का मौका मिला। साथ ही हम सब बहुत दिनों से सुबह शाम एक-दूसरे के साथ थे तो अपने दोस्तों को भी जानने का मौका मिला। मेरी ज़िंदगी की यह अविस्मरणीय यात्रा थी।